तेरा राज्य आए : युगांत-विद्या का

अध्याय दो

जीवितों और मृतकों

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ की सेवकाई के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडिओ अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती है और हमारे अध्यायों के अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती है, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं के टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों, संस्थानों, व्यापारों और लोगों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http ://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1
वर्तमान अवस्था 1
जो पुनर्जीवित न हुए हो 2
आत्मिक मृत्यु 2
नैतिक अयोग्यता 4
परमेश्वर के साथ शत्रुता 5
पुनर्जीवित लोग 6
आत्मिक जीवन 6
नैतिक योग्यता 8
परमेश्वर से मेल-मिलाप 10
मध्यवर्ती अवस्था 11
शारीरिक मृत्यु 12
पुनर्जीवित न हुई आत्माएँ 14
पुनर्जीवित आत्माएँ 16
प्रभु की उपस्थिति 16
संगति 17
सिद्ध पवित्रता 18
अंतिम अवस्था 20
शारीरिक पुनरुत्थान 20
पुनर्जीवित न हुए लोग 22
पुनर्जीवित लोग 25
सिद्ध शरीर 25
नया आकाश और नई पृथ्वी 27
पुरस्कार 27
उपसंहार 28

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तेरा राज्य आए : युगांत-विद्या का सिद्धांत

अध्याय दो

जीवितों और मृतकों

प्रस्तावना

लिखित इतिहास के शुरूआती समय से ही, मनुष्यों ने मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में विचार किया है। क्या हमारी आत्माएँ सदा के लिए जीवित रहती है? क्या हमारे पास किसी प्रकार के शरीर होंगे? क्या हमारे व्यक्तिगत मस्तिष्क उस समय भी कार्यशील रहेंगे? इन प्रश्नों का एकमात्र विश्वसनीय उत्तर पवित्र शास्त्र में परमेश्वर के प्रकटीकरण से आता हैं। बेशक, बाइबल हमें वह सब कुछ नहीं बताती है जो हम जानना चाहते हैं। और कभी-कभी मसीही लोग इसके वचनों की व्याख्या बहुत ही अलग तरीके से करते हैं। लेकिन हम सभी सहमत हैं कि पवित्र शास्त्र हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह के राज्य में एक महिमामय भविष्य की महान आशा देता है।

यह हमारी श्रृंखला *तेरा राज्य आए* का दूसरा अध्याय है : *युगांत-विद्या का सिद्धांत,* और हमने इसका शीर्षक रखा है "जीवितों और मृतकों।" इस अध्याय में, हम उस बात पर विचार करेंगे जिसे धर्मविज्ञानी आमतौर पर "व्यक्तिगत युगांत-विद्या" कहते हैं।

इसके पहले के अध्याय में, हमने एस्केटोलॉजी को "युग के अंत की विद्या" या "अंतिम बातों के सिद्धांत" के रूप में परिभाषित किया था। हमने यह भी कहा था कि युगांत-विद्या में अंतिम दिनों की वह पूरी अवधि शामिल है, जो यीशु के जीवन और सेवा के साथ शुरू हुई और जब वह वापस आता है तो यह पूरी हो जाएगी। इस अध्याय में, हम युगांत-विद्या की उपश्रेणी पर ध्यान केंद्रित करेंगे जिसे व्यक्तिगत युगांत-विद्या कहते हैं। व्यक्तिगत युगांत-विद्या :

> इस बात का अध्ययन है कि अंतिम दिनों की घटनाओं का एक मनुष्य व्यक्तिगत रूप से कैसे अनुभव करता है

— विशेष रूप से जीवन, मृत्यु, मध्यवर्ती अवस्था, और हमारे शरीरों एवं आत्माओं की अंतिम अवस्था के संबंध में।

"जीवितों और मृतकों" पर हमारा अध्याय तीन भागों में विभाजित होगा। सबसे पहले, हम देखेंगे कि मानव जीवन की वर्तमान अवस्था के बारे में बाइबल क्या कहती है। दूसरा, हम उस मध्यवर्ती अवस्था पर विचार करेंगे जो हमारे मरने के बाद शुरू होती है। और तीसरा, हम अंतिम समय की परिपूर्णता पर हमारी अंतिम अवस्था पर विचार करेंगे। आइए सबसे पहले हमारी वर्तमान अवस्था की ओर बढ़ते हैं।

वर्तमान अवस्था

जैसा कि हमने अपने पहले वाले अध्याय में देखा था, मानवता वर्तमान में अंतिम दिनों के दौरान रह रहा है, जिसे "एस्केटोन" के रूप में भी जाना जाता है। जिसके परिणामस्वरूप, हम सभी पाप और मृत्यु जैसे इस युग की कठिनाइयों से गुज़रते हैं। लेकिन ये समस्याएँ आने वाले युग की आशीषों, जैसे क्षमा और उद्धार के द्वारा आंशिक रूप से कम की जाती है। मानवता की वर्तमान अवस्था में, विश्वासी, या "पुनर्जीवित हुए," लोग

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दोनों युगों के प्रभावों का अनुभव साथ-साथ करते हैं, जबकि अविश्वासी या "पुनर्जीवित न हुए" लोग इस युग की कठिनाइयों का अत्यधिक अनुभव करते हैं।

बाइबलीय धर्मविज्ञान के अनुसार, "पुनर्जीवित" शब्द का अर्थ है "पुनः-सृजा जाना" या "पुनर्जन्म पाना।" इस तरह, हम उन लोगों को जो पुनर्जीवित हुए हैं आत्मिक रूप से "जीवित" कह सकते हैं। इससे माना जाता है कि ईश्वरीय-ज्ञान वाले शब्द "पुनर्जीवित न हुए" का अर्थ है "पुनः न सृजा जाना" या "पुनर्जन्म न होना।" दूसरे शब्दों में, पुनर्जीवित न हुए लोग आत्मिक रूप से "मृतक" हैं।

भिन्नता के इस प्रकाश में, हम मानवता की वर्तमान अवस्था को दो भागों में संबोधित करेंगे। सबसे पहले, हम उन पर विचार करेंगे जो पुनर्जीवित नहीं हैं। और दूसरा हम उनको देखेंगे जो पुनर्जीवित हैं। आइए पुनर्जीवित न हुए लोगों की वर्तमान अवस्था के साथ शुरूआत करें।

जो पुनर्जीवित न हुए हो

पवित्र-शास्त्र हमें बताता है कि पाप में पतित मनुष्य आत्मिक रूप से मरे हुए पैदा होते हैं। और जो लोग पुनर्जीवित नहीं हुए है वे आत्मिक मृत्यु की अवस्था में रहते हैं क्योंकि उन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा नवीनीकृत या "पुनर्जीवित" नहीं किया गया है।

हम पुनर्जीवित न हुए लोगों की तीन विशेषताओं पर ध्यान देंगे : पहला, उनकी आत्मिक मृत्यु; दूसरा, उनकी नैतिक अयोग्यता; और तीसरा, परमेश्वर के साथ उनकी शत्रुता। हम उनकी आत्मिक मृत्यु की अधिक विस्तार से खोज करने के द्वारा शुरू कर सकते हैं।

आत्मिक मृत्यु

आत्मिक मृत्यु और शारीरिक मृत्यु के बारे में समानांतर रूप से सोचना हमारे लिए आसान है। लेकिन यह थोड़ा भ्रामक हो सकता है। जब हम शारीरिक रीति से मरते हैं, तो हमारी आत्माएँ हमारे शरीरों से अलग हो जाते हैं। हमारे शरीर स्वतंत्र कार्य करने में असमर्थ हैं, और अंततः उस हद तक नष्ट हो जाते हैं कि वे मिट्टी में मिल जाते हैं। लेकिन जब हम आत्मिक रूप से मरे हुए होते हैं, तब भी हमारी आत्माएँ हमारे शरीरों में सक्रिय रहती हैं। पुनर्जीवित न हुए लोग सोचना, महसूस करना, स्वप्न देखना, चुनाव करना, और संसार के साथ लगभग उन प्रत्येक तरीकों में व्यस्त रहते हैं जिन्हें पुनर्जीवित लोग करते हैं। वे रोबोट नहीं हैं, न ही वे बुद्धिहीन शरीर हैं। तो, वास्तव में आत्मिक मृत्यु क्या है?

> जब हम आत्मिक मृत्यु के बारे में सोचते हैं, तो मुझे पुनः वाटिका की याद आती है। जब हम पुराने नियम को देखते हैं, विशेषकर उत्पत्ति में, तो यह वास्तव में रुचिकर है जहाँ परमेश्वर ने आदम से कहा था, वह कहता है, "वाटिका के सब वृक्षों का फल तू खा सकता है।" अंग्रेजी में कुछ अनुवाद और दूसरी भाषाएँ कहेंगी, "तू *बिना खटके* खा सकता है"... स्पष्ट रूप से परमेश्वर कह रहा था, "तू अपने दिल की इच्छा पूरी होने तक खा सकता है। तू जो चाहता है उन सब को तू खा। लेकिन यहाँ एक ऐसा वृक्ष है, और यदि तू उस वृक्ष में से खाता है ... " — जैसे मैं कहता हूँ — "तू मुर्दे के समान मरा हुआ बन जाएगा।" इस तरह स्पष्ट रूप से, परमेश्वर ने कहा कि जैसे ही आदम ने उस फल को खाया वह तुरंत मर जाएगा, न सिर्फ शारीरिक रीति से, बल्कि आत्मिक रीति से भी। पूरे पुराने नियम में हम पाप की भयानक मजदूरी को देखते हैं। यहाँ तक कि नए नियम में भी, पौलुस उस आत्मिक मृत्यु के बारे में बात करने जा रहा है। हम

> ऐसे पदों को देखने जा रहे हैं जैसे "पाप की मजदूरी मृत्यु है"... एक और पद जो मुझे अच्छा लगता है, "सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं"... यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि पाप ने मुझे परमेश्वर से अलग कर दिया है, कि पाप ने सभी तरह की समस्या को पैदा किया है। जब मैं पहली बार समझता हूँ कि मैंने पाप किया है, और मैं परमेश्वर की महिमा से रहित हूँ, तो मैं सोचता हूँ, "मैं क्या कर सकता हूँ? मैं किस की ओर देखूं?" यह वह समय होता है जहाँ सुसमाचार सामने आता है।
>
> — रेव्ह. जॉर्ज शामब्लिन

आदि में, परमेश्वर ने आत्मिक जीवन के साथ आदम और हव्वा की सृष्टि की। तो फिर, आत्मिक मृत्यु कहाँ से आई? संक्षिप्त उत्तर है : परमेश्वर। अदन की वाटिका में जब आदम और हव्वा ने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया, तो परमेश्वर ने आत्मिक मृत्यु के साथ मानवता को अभिशाप दिया। उत्पत्ति 2:17 में, परमेश्वर ने आदम से कहा :

> पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना : क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा (उत्पत्ति 2:17)।

लेकिन जैसा कि हम उत्पत्ति 3 में पढ़ते हैं, शैतान ने सर्प के माध्यम से बात की और हव्वा को फल खाने के लिए उकसाया। और जब आदम ने देखा कि हव्वा ने उसे खाया और जीवित है, तो उसने भी कुछ खा लिया। फिर, वाचा की शर्तों के अनुसार जिसे परमेश्वर ने आदम के साथ बाँधी थी, परमेश्वर ने उन्हें अभिशाप दिया। वे उस दिन नहीं मरे, कम से कम शारीरिक रूप से तो नहीं, लेकिन वे आत्मिक रूप से भ्रष्ट हो गए। और यही आत्मिक भ्रष्टता आत्मिक मृत्यु का सार है। रोमियों 7:14-25 में, पौलुस ने इसे हमारे "पापमय स्वभाव" के रूप में संदर्भित किया। उसने यह कहते हुए इसका वर्णन किया कि पाप हमारे शरीरों में वास करता है और यहाँ तक कि हमारे दिमागों को भी नियंत्रित करता है।

इससे भी बुरी बात यह है कि आत्मिक मृत्यु आदम और हव्वा के सभी स्वाभाविक वंशजों को प्रभावित करती है। यूहन्ना 3:5-7, रोमियों 8:10, और कुलुस्सियों 2:13 जैसे पद संकेत देते हैं कि यीशु को छोड़कर बाकी सभी मनुष्य, इस संसार में आत्मिक रीति से मरे हुए पैदा होते हैं। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 5:12-19 में दर्शाया कि, आदम हमारा प्रतिनिधि था और, इसलिए, हम सभी उसकी सजा में भागीदार हैं।

> सबसे कठिन सिद्धांतों में से एक, जिसे लोग कहते हैं कि बाइबल सिखाती है कैसे, आदम में जैसे, सबने पाप किया — जैसा कि पौलुस इसके बारे में रोमियों 5 में बताता है — और इस तरह, पाप, दंड और मृत्यु की ओर ले जाता है, और हम आदम में हैं। क्या यह आदम का पाप है, और मुझे इसके लिए क्यों दोषी ठहराया जा रहा है? हम आदम के दोष में हमारी दोषपूर्णता के संबंध में परमेश्वर की निष्पक्षता के बारे में इस प्रश्न का उत्तर कैसे देते हैं? ... लोग अक्सर कहते हैं कि उन्हें इस पर आपत्ति है, लेकिन वे आमतौर जिस बात पर आपत्ति नहीं करते हैं, वह है पौलुस के तर्क का दूसरा पक्ष, जो है कि, जैसा कि आदम में सब ने पाप किया, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे। और यदि हम एक के लिए आपत्ति करते हैं, तो दूसरे के लिए क्यों आपत्ति नहीं करते? परमेश्वर जो कह रहा है, वह है कि, वह मानवता को दो श्रेणियों में और केवल दो श्रेणियों में मानता है। यह सभी प्रकार के नस्लीय संघर्ष या जातीय संघर्ष के लिए

> असाधारण रूप से मददगार है। परमेश्वर के दृष्टिकोण से केवल दो ही श्रेणियाँ हैं : हम या तो आदम में हैं या मसीह में ... यह ऐसी बात है जिसे हमें स्वीकार करनी चाहिए क्योंकि इसे वचन में सिखाया गया है, और व्यावहारिक कारण से कि यदि हम स्वीकार करें कि हम मसीह में हो सकते हैं और जिलाए जाते हैं, तो हमें सिक्के के दूसरे पहलू को भी जिसे पौलुस सिखाता है स्वीकार करने की आवश्यकता है।
>
> — डॉ. जॉश मूडी

यह देखने के बाद कि पुनर्जीवित न हुए लोगों की वर्तमान अवस्था आत्मिक मृत्यु के द्वारा चिह्नित होती है, हम उनकी नैतिक अयोग्यता पर विचार करने के लिए तैयार हैं।

नैतिक अयोग्यता

"नैतिक अयोग्यता" यह शब्द इस तथ्य को संदर्भित करता है कि पुनर्जीवित न हुए लोगों के पास :

> परमेश्वर को प्रसन्न करने या उसकी आशीषों के योग्य बनने के लिए कोई योग्यता नहीं होती।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, वे क्षमा के लिए, या उद्धार के अपने कार्य को पूरा करने के लिए उससे अपील नहीं कर सकते हैं।

हिप्पो के बिशप, अगस्तीन ने, जो कि सन् 354 से 430 ईसवी में रहे थे, प्रसिद्ध रूप से सिखाया कि मानवता के प्रथम पाप से पहले, आदम और हव्वा *पोसे नॉन पिकारे* की अवस्था में रहते थे। इस लातिनी वाक्यांश का शाब्दिक अनुवाद "पाप न करने में सक्षम होने" के रूप में किया जा सकता है। हालांकि, अगर हम इसे बाइबलीय धर्मविज्ञान के उपयोग के रूप में देखे तो, इस वाक्यांश को ज्यादा सामान्य रूप से "पाप न करने की योग्यता" के रूप में अनुवादित किया जाता है। अगस्तीन के अनुसार, आदम और हव्वा को पाप से पूरी तरह से बचने के लिए सशक्त किया गया था। लेकिन उनमें पाप करने की क्षमता भी थी। और जब उन्होंने पाप किया, तो वे *पोसे नॉन पिकारे* की अवस्था से हट कर *नॉन पोसे नॉन पिकारे* की अवस्था में हो गए — पाप न करने की अयोग्यता। उन्होंने एवं उनके सभी स्वाभाविक रूप से जन्मे वंशजों ने पाप से बचने की नैतिक योग्यता को खो दिया।

यीशु और पौलुस दोनों ने यूहन्ना 8:31-44, और रोमियों 6:6-20 जैसे स्थानों में, नैतिक अयोग्यता की तुलना पाप का दास होने से की है। और पौलुस ने इफिसियों 2:1-5 में सिखाया कि पुनर्जीवित न हुए लोग संसार और इसके शैतानी अगुवाई वाले पापमय मार्ग पर चलते हुए पाप के नियंत्रण तले रहते हैं। और वे आत्मिक मृत्यु की इस अवस्था में बन रहते हैं, अपने आप को बचाने में असमर्थ जब तक कि परमेश्वर दयालु हो कर उन्हें नहीं बचाता है। हाँ, पुनर्जीवित न हुए लोग फिर भी ऐसे कार्यों को करते हैं जो *बाहरी रूप से* भले होते हैं। वे अपने बच्चों को प्यार करते एवं उनका पालन करते हैं। वे न्याय को बढ़ावा देते हैं। यहाँ तक कि वे दूसरों के लिए अपने प्राणों को भी देते हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश, ये सभी कार्य दागी हैं क्योंकि पुनर्जीवित न हुए लोग परमेश्वर के लिए प्रेम से प्रेरित नहीं होते हैं। यीशु ने इस बात को लूका 6:43-45 में संबोधित किया। उसने पुनर्जीवित न हुए लोगों के कार्यों की तुलना बुरे पेड़ो द्वारा पैदा किए गए फलों के से की। उसका तात्पर्य था कि मनुष्य अपने हृदयों के अनुसार कार्य करते हैं। इसलिए, बुरे हृदय वाले लोग — अर्थात, पुनर्जीवित न हुए लोग

— नैतिक रूप से ऐसे कार्यों को करने में असमर्थ हैं जिन्हें परमेश्वर अच्छा मानता है। पौलुस ने इस समस्या का वर्णन रोमियों 8:6-8 में किया जब उस ने कहा :

> शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है ... क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है। क्योंकि न तो वह परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है। जो पापमय स्वभाव के द्वारा नियंत्रित होते है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते (रोमियों 8:6-8)।

> क्या पुनर्जीवित न हुए लोग नैतिक रूप से परमेश्वर को प्रसन्न करने में सक्षम हैं? संक्षिप्त उत्तर "नहीं" है, क्योंकि परमेश्वर को प्रसन्न करने की अवधारणा को, संबंध के संदर्भ में देखना है ... इसलिए, ऐसे कार्य जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं, वे अनिवार्य रूप से मनुष्य और परमेश्वर के संबंध के परिणाम हैं। हम जिस तरह रहते है उसमें परमेश्वर को प्रसन्न करने के वास्ते, हमें पहले विश्वास करना चाहिए कि वह है और वह अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है — यह इब्रानियों की भाषा है। इसलिए, इसी कारण से ऐन्ग्लिकन आर्टिकल्स ऑफ रिलीजन कहता है कि पुनर्जीवित न हुए मनुष्य के कार्य में अनिवार्य रूप से पाप का स्वभाव होता है, क्योंकि वे ऐसे कार्य हैं, जो परमेश्वर के साथ संबंध के संदर्भ से बाहर लोगों द्वारा की गई बातें हैं, और चूंकि मानवता को परमेश्वर के साथ संबंध के लिए बनाया गया है, यही वह अनिवार्य संदर्भ है जिसके लिए कोई भी कार्य होना चाहिए जो उसे प्रसन्न करता हो।
>
> — डॉ. कैरी विन्ज़ैन्

अभी तक, हमने आत्मिक मृत्यु और नैतिक अयोग्यता के संदर्भ में पुनर्जीवित न हुए लोगों= को देखा। और यह हमें उनकी तीसरी विशेषता पर लाती है : परमेश्वर के साथ शत्रुता।

परमेश्वर के साथ शत्रुता

आत्मिक मृत्यु का एक सबसे हानिकारक पहलू यह है, कि पुनर्जीवित न हुए लोग परमेश्वर के शत्रु हैं। पवित्र शास्त्र सिखाता है कि शैतान और उसके अनुयायी परमेश्वर और उसके वफादार स्वर्गदूतों के साथ निरंतर युद्ध में हैं। और पुनर्जीवित न हुए लोग शैतान की तरफ हैं। वे अपने पाप से प्रेम और परमेश्वर से घृणा करते हैं। पुनर्जीवित न हुए लोगों के विषय में पौलुस ने इफिसियों 2:1-3 में जो कहा उसे सुनिए :

> [जो] [अपने] अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे ... इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार [चलते] थे जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है ... [अपने] शरीर की लालसाओं में दिन बिताते और शरीर और मन की इच्छाएँ पूरी करते थे, ... [वे] स्वभाव ही से क्रोध की संतान थे (इफिसियों 2:1-3)।

परमेश्वर और पुनर्जीवित न हुए मनुष्य के बीच मौजूद शत्रुता के बारे में इससे बड़े बयान की कल्पना करना कठिन है। पुनर्जीवित न हुए लोग आत्मिक संघर्ष में खाली दर्शक या निर्दोष नागरिक नहीं हैं। इसके विपरीत, जैसा कि हम रोमियों 5:10, और कुलुस्सियों 1:21 जैसे स्थानों में पढ़ते हैं, पुनर्जीवित न हुए लोग स्वयं परमेश्वर के शत्रु हैं। और इसके कारण से, वे दोषी ठहरे हैं, परमेश्वर के अनंत क्रोध को सहने के]

लिए ठहराए गए हैं। जैसा कि यीशु ने अविश्वासी यहूदियों को यूहन्ना 8:42-44 में बताया :

> यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझसे प्रेम रखते ... तुम अपने पिता, शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो (यूहन्ना 8:42-44)।

और याकूब 4:4 में, याकूब ने लिखा :

> क्या तुम नहीं जानते कि संसार से मित्रता करना परमेश्वर से बैर करना है? अतः जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है (याकूब 4:4)।

इनमें से कोई भी ऐसा नहीं जो कहे कि पुनर्जीवित न हुए लोग जानबूझकर और दृढ़-संकल्प करके परमेश्वर का विरोध करते हैं, हालांकि कुछ लोग स्पष्ट रूप से ऐसा करते हैं। अधिकांश पुनर्जीवित न हुए लोग, हालांकि, बस छले जाते हैं। आखिरकार, झूठे धर्म और यहाँ तक कि नास्तिकवाद भी, सच्चे वैश्विक दृष्टिकोणों को बढ़ावा देने का दावा करते हैं। लेकिन यहाँ तक कि जब पुनर्जीवित न हुए लोगों में बाइबल के परमेश्वर के प्रति प्रत्यक्ष और स्पष्ट शत्रुता का अभाव होता है, तब भी वे उसके शत्रु होते हैं। वे अभी भी शैतान के मार्गों का पालन करते हुए, इस संसार के राज्य का हिस्सा हैं। वे फिर भी परमेश्वर की भलाई का तिरस्कार करते हैं और उसके अधिकार का विरोध करते हैं। और परमेश्वर फिर भी उनको दोषी ठहराता है।

अब जबकि हमने पुनर्जीवित न हुए लोगों के दृष्टिकोण से मानवता की वर्तमान अवस्था पर विचार कर लिया है, आइए अपने ध्यान को पुनर्जीवित हुए लोगों की ओर करे।

पुनर्जीवित लोग

आपको याद होगा कि "पुनर्जीवित हुए" वाले तकनीकी शब्द का अर्थ है पुनः-सृष्टि या पुनर्जन्म। दूसरे शब्दों में, पुनर्जीवित हुए लोग वे हैं जो पवित्र आत्मा के कार्य के माध्यम से पुनः जन्म पाए हैं। जब यह होता है, तो हमारी आत्माओं को पुनर्जीवित किया जाता है या नया जीवन दिया जाता है।

हम पुनर्जीवित हुए लोगों की विशेषताओं का पता तीन तरीकों से लगाएंगे जो कि पुनर्जीवित न हुए लोगों पर हमारी चर्चा के अनुरूप है। सबसे पहले, हम देखेंगे कि उनके पास आत्मिक जीवन है। दूसरा, हम उनकी नैतिक योग्यता की व्याख्या करेंगे। और तीसरा, हम परमेश्वर के साथ उनके मेल-मिलाप पर ध्यान देंगे। आइए पहले उनके आत्मिक जीवन की ओर देखें।

आत्मिक जीवन

बाइबल सिखाती है कि सभी मनुष्य आत्मिक मृत्यु की अवस्था में पैदा होते हैं। इसलिए, हमें पुनर्जीवित होने के लिए — आत्मिक जीवन पाने के लिए — हमारी आत्माओं को मृत्यु से जीवन में प्रवेश करना है। हम इसे एक प्रकार के आत्मिक पुनरुत्थान के रूप में मान सकते हैं। यूहन्ना 5:24, इफिसियों 2:4, 5 और कुलुस्सियों 2:13 जैसे स्थानों में इस सिद्धांत को स्पष्ट रूप से सिखाया गया है।

पवित्र शास्त्र इस प्रक्रिया का वर्णन पुनर्जन्म के संदर्भों में भी करता है। मनुष्य पहली बार तब पैदा होते हैं जब वे शारीरिक जीवन पाते हैं। लेकिन हमारे लिए उद्धार, जैसे परमेश्वर की आशीषों को पाने के वास्ते, हमें दूसरा जन्म पाना अवश्य है — एक आत्मिक जन्म।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यह विचार कि परमेश्वर की आशीषों को पाने के लिए हमें आत्मिक जीवन की आवश्यकता है जटिल नहीं है। लेकिन यहाँ तक कि नीकुदेमुस, एक फरीसी और इस्राएल के शिक्षक ने भी इसे समझने के लिए संघर्ष किया। इसलिए, यूहन्ना 3:3-6 में, यीशु ने इसे नीकुदेमुस को इस तरीके से समझाया :

> यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता ... जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है (यूहन्ना 3:3-6)।

यहाँ, यीशु ने सिखाया कि हमारे पास आत्मिक जीवन केवल तब हो सकता है यदि पवित्र आत्मा हमारी आत्माओं को जन्म देता है। और पौलुस ने कुछ-कुछ ऐसा ही तीतुस 3:5 में कहा जब उसने लिखा :

> [परमेश्वर] ने हमारा उद्धार ... नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा किया (तीतुस 3:5)।

कुछ अनुवादों में, यहाँ वाले "नए जन्म" को वास्तव में "पुनर्जनन" कहा गया है।

हमारे आत्मिक जीवन के बारे में दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह हमेशा के लिए है, या, जैसा कि कुछ अनुवादों ने इसे "अनंत" कहा है। जब पवित्र आत्मा हमें पुनर्जीवित करता है, हमारी आत्मा मृत्यु से जीवन में प्रवेश करती है। और यह जीवन कभी समाप्त नहीं होता। चाहे जब हमारे पार्थिव शरीर मरते हैं, तब भी हमारी आत्माएँ सदा के लिए जीवित रहेंगी।

> अनंत जीवन उन अद्‌भुत, बहुत अद्‌भुत अवधारणाओं में से एक है जिसके बारे में हर एक मसीही व्यक्ति सुनता है, जानता है, और जिस पर विश्वास करना चाहिए। यह कब शुरू होता है, यह सदा से एक दिलचस्प प्रश्न रहा है, क्योंकि मैं सोचता हूँ कि बहुत से लोग अनंत जीवन के बारे में ऐसा सोचते हैं, जो कि हमारे साथ तब होता है जब हम मर जाते हैं, जो हमेशा के लिए चलता चला जाता है। और, बेशक, यह वही बात है, क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है कि हमारे पास अनंत जीवन तब होता है जब हम मसीह पर विश्वास लाते हैं, कि यह उस क्षण शुरू होता है जब हम नया जीवन पाते हैं, जब परमेश्वर हमें पुनर्जीवित करता है। और उस क्षण से, हम परमेश्वर के होते हैं, हम परमेश्वर के लिए जीते हैं, हम परमेश्वर की महिमा करते हैं, और वह हमारा रक्षक और रखवाला है। उस क्षण से, कोई भी हमें पिता के हाथ से कभी नहीं छीन सकता है। इसलिए, अनंत जीवन सिर्फ यह नहीं है कि यह कितने समय तक चलता जाता है और न सिर्फ सिद्धता के बारे में है, लेकिन यह जीवन की गुणवत्ता के बारे में है, ऐसा जीवन जो प्रभु के लिए और प्रभु के साथ जीया गया है, दोनों अभी और अंततः नए आकाश और नई पृथ्वी पर।
>
> — डॉ. पॉल गार्डनर

हम अक्सर अंनत जीवन के बारे में कुछ ऐसा सोचते हैं जो हमें मरने के बाद हासिल होता है। और एक महत्वपूर्ण भाव है जिसमें हमारा अनंत जीवन अपनी पूर्णता में तब तक शुरू नहीं होगा जब तक हमारे शरीर पुनःजीवित नहीं किए जाते हैं। लेकिन पवित्र शास्त्र फिर भी अनंत जीवन के बारे में ऐसी आशीष के रूप में

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बोलता है जिसे पुनर्जीवित हुए लोग अपनी वर्तमान अवस्था में पहले ही से आनंद लेते हैं। यूहन्ना 10:28, 1 तीमुथियुस 6:12, और 1 यूहन्ना 5:11-13 सब सिखाते हैं कि पुनर्जीवित लोग पहले ही से हमेशा के आत्मिक जीवन को रखते हैं।

पुनर्जीवित हुए लोगों के आत्मिक जीवन को ध्यान में रखते हुए, आइए पुनःस्थापित हुई उनकी नैतिक योग्यता पर विचार करें।

नैतिक योग्यता

आश्चर्य की बात नहीं, कि "नैतिक योग्यता" वाला शब्द संदर्भित करता है :

> परमेश्वर को प्रसन्न करने या उसकी आशीषों के योग्य बनने की क्षमता को।

हम इस बारे में कुछ समय बाद और बात करेंगे, विशेष रूप से योग्य बनने के संबंध में। इस समय पर, हम सिर्फ इतना कहेंगे कि हमारी नैतिक क्षमता हमें हमारे उद्धार को कमाने के योग्य नहीं बनाती है — क्षमा, धार्मिकता और अनंत जीवन जैसी चीज़ें परमेश्वर से मुफ्त उपहार हैं, जो कि मसीह की योग्यता पर आधारित हैं। लेकिन परमेश्वर की इच्छा का पालन करने और उसके राज्य की आशीषों को खोजने के लिए हमारी पुनःस्थापित नैतिक योग्यता हमें सशक्त बनाती है।

आपको याद होगा कि, अगस्तीन के अनुसार, जब मानवता पाप में गिरी, तो हम *पोसे नॉन पिकारे,* या पाप न करने योग्यता की अवस्था से *नॉन पोसे नॉन पिकारे,* या पाप न करने की अयोग्यता में चले गए। लेकिन अगस्तीन ने यह भी सिखाया कि जब पवित्र आत्मा हमारी आत्माओं को पुनर्जीवित करता है, हमें आत्मिक जीवन देता है, तो वह हमारी नैतिक योग्यता को पुनर्जीवित करता है। वह हमें वापस *पोसे नॉन पिकारे* की अवस्था में ले जाता है। दूसरे शब्दों में, पुनर्जीवित हुए लोग पाप से बचने और परमेश्वर को प्रसन्न करने की योग्यता को फिर से प्राप्त करते हैं। इफिसियों 2:4-5 में पौलुस ने जो लिखा उसे सुनिए :

> परमेश्वर ने जो दया का धनी है, ... जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया — अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है (इफिसियों 2:4-5)।

और फिर पद 10 में उसने कहा :

> हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया (इफिसियों 2:10)।

यह तथ्य कि परमेश्वर पुनर्जीवित हुए लोगों के लिए भले कामों को तैयार करता है प्रमाणित करता है कि हमने अपनी नैतिक योग्यता को फिर से हासिल कर लिया है। फिर भी, पुनर्जनन और उद्धार अनुग्रह के परिणाम हैं। हमारे भले काम हमें नहीं बचाते हैं।

अब, जब पवित्र आत्मा हमें पुनर्जीवित करता है, तो हमें समझने की आवश्यकता है कि वह पाप की भ्रष्टता एवं उसके प्रभाव को हमारे जीवनों से पूरी तरह से नहीं हटाता है। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 7:14-25 में समझाया, कि पाप जो हम में रहता है वह अभी भी हमारे अंदर वास करने वाले पवित्र आत्मा के साथ लड़ता है। पवित्र शास्त्र रोमियों 7:23, गलातियों 5:17, और 1 पतरस 2:11 जैसे स्थानों में इस संघर्ष का वर्णन युद्ध के संदर्भ में करता है।

लेकिन सुसमाचार यह है, कि आत्मा हम मे वास करता है और हम में कार्य करता है। इसलिए, भले ही हम

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पाप के प्रभाव के कारण ठोकर खाते रहें, हम आत्मा के प्रभाव के कारण भले काम भी करते हैं। जैसा कि पौलुस ने इसे फिलिप्पियों 2:13 में लिखा है :

> परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है (फिलिप्पियो 2:13)।

इसलिए, यदि परमेश्वर उन भले कामों का श्रेय लेता है जो हम करते हैं, तो योग्यता तस्वीर में कहाँ से आती है? धर्मविज्ञानियों का इस विषय पर अलग-अलग दृष्टिकोण है। एक ओर, सभी सुसमाचारीय धर्मविज्ञानी इस बात से सहमत हैं कि परमेश्वर उन भले कामों के लिए श्रेय लेने का दावा कर सकता है जिन्हें हम करते हैं। यह उन पदों से स्पष्ट है जिन्हें हम पढ़ चुके हैं।

लेकिन दूसरी ओर, कुछ सुसमाचारीय धर्मविज्ञानी कहते हैं कि जो पुनर्जीवित हुए हैं वे श्रेय की कुछ मात्रा पर दावा कर सकते हैं। वे इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि परमेश्वर हमारे भले कामों को स्वर्गीय खजाने और मुकुट से हमारे भले कामों को पुरस्कृत करता है। कुछ उदाहरणों के रूप में, मत्ती 5:12 में, यीशु ने कहा कि जो कोई सताये जाते हैं वे प्रतिफल पायेंगे। मत्ती 16:27 में, उसने कहा कि अंतिम न्याय में प्रत्येक व्यक्ति को “उसके कामों के अनुसार” प्रतिफल मिलेगा। और 1 कुरिन्थियों 3:8 में, पौलुस ने कहा कि अनंत पुरुस्कारों को “[हमारे] कार्यों के अनुसार” दिया जाएगा।

> आजकल कुछ आवाजें हैं जो तर्क देते हैं कि धर्मी ठहराए जाना, एक प्रकार के जोड़े में हैं। मसीह ने वृक्ष पर हमारे दोष को अपने शरीर पर लेकर, हमारी ओर से जो कार्य किया उसके कारण हम अब पापियों के रूप में धर्मी ठहराए जाते हैं, लेकिन फिर अंत में जब परमेश्वर पूछता है, जैसे कि यह था, “मुझे आपको यहाँ अंदर क्यों आने देना चाहिए?” तब आप उस अवस्था में आंशिक रूप से मसीह के कार्य के आधार पर और आंशिक रूप से उस आधार पर जैसे आपने जीवन जिया है ... लेकिन यह बेहद परेशान करने वाला है, क्योंकि इसका अर्थ है कि धर्मी ठहराया जाना जो प्राप्त हुआ है, वह पहली दृष्टि में सुरक्षित नहीं है, यह निश्चित नहीं है ... इसलिए यह परेशान करने वाला है। दूसरी ओर, आपको पुरुस्कार की इस धारणा के साथ कुछ करना होगा क्योंकि बाइबल में पुरुस्कार वाली भाषा का काफी इस्तेमाल किया गया है। मैं सोचता हूँ कि कई चीजें हैं जो बातों को थोड़ा स्पष्ट करने में मदद करती हैं। यदि हम भले काम करते हैं जो अंत में महिमा और पुरुस्कार में परिपूर्ण हो जाते हैं, तो प्रश्न यह उठता है, क्या ये बातें हमारी स्वीकृति के आधार हैं या नहीं? ... इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि नए आकाश और नई पृथ्वी में मसीही पुरुस्कार, संबंध की उस परिपूर्णता के साथ बंधे हैं जो पहले ही से स्वयं अनुग्रह का फल है, यही कारण है कि रोमियों अनुग्रह के अनुसार पुरुस्कारों को ठहराए जाने की बात कर सकता है और ताकि हमारे काम आधार न बने, जैसे कि उनका कुछ स्वतंत्र योगदान है, लेकिन जो कुछ हम करते हैं और हमारे जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह की परिपूर्णता से इन पुरुस्कारों के बीच कुछ संबंध है जो हमें कुछ कर करने के लिए सक्षम बनाता है। लेकिन मसीह की धार्मिकता जो हमारे लिए गिनी गई और हमारा पाप जो उसके लिए गिना गया, यह परमेश्वर के समक्ष हमारी स्वीकृति का आधार है, और उसने सम्पूर्ण भार उठाया और सम्पूर्ण दे दिया, और यह अंतिम दिन में जीवित परमेश्वर के समक्ष हमारी स्वीकृति का आधार है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

— डॉ. डी.ए. कारसन

योग्यता और पुरुस्कार के बारे में प्रश्न का उत्तर भले ही हम कैसे भी दें, सभी सुसमाचारीय लोग सहमत हैं कि परमेश्वर ने हमारी नैतिक योग्यता को पुनःस्थापित किया है और भले कामों को करने के लिए वह हमें जिम्मेदार ठहराता है। वह हमें उसका अनुकरण करने, उसे प्रेम करने, एक दूसरे से प्रेम करने और उसकी व्यवस्था का पालन करने के लिए कहता है। और जब हम ऐसा करते हैं तो वह हमें बहुत इनाम देने की प्रतिज्ञा करता है।

अभी तक, हमने उनके आत्मिक जीवन और नैतिक योग्यता के संबंध में पुनर्जीवित लोगों की जाँच की है। आइए अब परमेश्वर के साथ उनके मेल-मिलाप की ओर बढ़ते है।

परमेश्वर से मेल-मिलाप

जब परमेश्वर हमें पुनर्जीवित करता है, तो वह हमें अपने परिवार में *लेपालक* भी बनाता है। एक समय हम शैतान की ओर से होकर परमेश्वर के खिलाफ लड़ते हुए उसके शत्रु थे। लेकिन अब परमेश्वर ने यीशु के माध्यम से हमारे साथ शांति स्थापित की है। मसीह की मृत्यु के द्वारा हमारे पाप क्षमा हुए हैं, और हमें उसकी वाचा की प्रतिज्ञाओं के वारिस के रूप में उसके परिवार में लाया गया है।

जैसा कि पौलुस ने रोमियों 5:10 में लिखा :

> क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ (रोमियों 5:10)।

और उसने कुलुस्सियों 1:21, 22 में अनिवार्य रूप से यही बात कही।

वास्तव में, हम परमेश्वर के परिवार में न सिर्फ बच्चे और वारिस हैं। क्योंकि हम उसके पुत्र यीशु में एक साथ जुटाए गए हैं, हम वास्तव में परमेश्वर के प्रिय पुत्र के रूप में यीशु के ओहदे को साझा करते हैं। कई स्थानों में, पौलुस ने सिखाया कि, उद्धार देने वाले विश्वास के द्वारा, जो बपतिस्मा में चिह्नित है, हम मसीह के साथ एक किए गए हैं। इसलिए, जब परमेश्वर हमें देखता है, तो वह हमें मसीह की छाया में देखता है, और वह मसीह की सिद्धता और धार्मिकता को हमारे लिए गिनता है। दूसरे शब्दों में, वह हम से ऐसा व्यवहार करता है जैसे कि हम स्वयं यीशु हैं : अब्राहम और दाऊद के वारिस, और जो परमेश्वर की वाचा का सिद्धता से पालन करते हैं। और क्योंकि हम मसीह की मृत्यु के साथ भी एक किए गए हैं, परमेश्वर हमें ऐसे गिनता है जो पहले ही अपने पापों के लिए मर गए हैं, ताकि हमारे लिए कोई सजा बाकी न रहे - सिर्फ आशीषें रहें। हम इसे रोमियों 6:3, 4 और 1 कुरिन्थियों 12:12-27 जैसे स्थानों में देखते हैं। और पौलुस के वचनों को गलातियों 3:26-27 में सुनिए :

> तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो, और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है (गलातियों 3:26-27)।

इसके अतिरिक्त, पौलुस ने वास्तव में सिखाया कि मसीह के साथ एकजुटता — और जिस मेल-मिलाप को यह स्थापित करता है — वह परमेश्वर के युगांतरकारी प्रतिज्ञाओं की पूर्ति है। जैसे कि, यह एक प्रमाण है कि अंतिम दिनों की नई सृष्टि शुरू हो गई है। इस आधार पर, हम यह भी कह सकते हैं कि परमेश्वर से मेल-

मिलाप उन अनंत पुरुस्कारों का पूर्व-स्वाद है जिन्हें हम तब प्राप्त करेंगे जब नया आकाश और नई पृथ्वी अपनी पूरी पूर्णता में आएगी। 2 कुरिन्थियों 5:17 में, पौलुस ने लिखा :

> इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं! (2 कुरिन्थियों 5:17)।

कुछ अनुवाद "वहाँ नई सृष्टि है" वाले वाक्यांश को "*वह* नई सृष्टि है" या "वह नया प्राणी है" के साथ बदलते हैं। लेकिन यूनानी *कायने क्टिसिस* का ज्यादा स्वाभाविक अर्थ है "*वहाँ* नई सृष्टि है।" इस तरह से पढ़ना उस नवीनीकरण की बेहतर समझ बनाता है जिसका वर्णन पौलुस ने किया। इसलिए, मसीह के साथ हमारी एकता प्रमाणित करता है कि आने वाला युग आ गया है। जिस तरह पौलुस ने पद 19-21 में जारी रखा, उसे सुनिए :

> परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया ... [हम] मसीह की ओर से निवेदन करते हैं कि परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो। जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं (2 कुरिन्थियों 5:19-21)।

मसीह ने क्रूस पर हमारा स्थान लिया, और हमें बचाने के खातिर पापी ठहराया गया था। और क्योंकि उसने यह किया, अब उसकी धार्मिकता हमारे लिए गिनी गई। यह वह है जो हमारे मेल-मिलाप को हासिल करती है। परमेश्वर न सिर्फ हमें निर्दोष के रूप में देखता है क्योंकि हमें मसीह में क्षमा दी गई है, बल्कि पूरी तरह से आज्ञाकारी के रूप में भी — जिस तरह से स्वयं मसीह आज्ञाकारी है।

"जीवितों और मृतकों" पर हमारे अध्याय में अभी तक, हमने देखा कि बाइबल मानवीय जीवन की वर्तमान अवस्था के बारे में क्या कहता है। आइए अब अपने दूसरे प्रमुख विषय को संबोधित करते हैं : मध्यवर्ती अवस्था।

मध्यवर्ती अवस्था

> "मध्यवर्ती अवस्था" ऐसा शब्द है जिसे धर्मविज्ञानी, लोगों की मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच वाले समय का वर्णन करने के लिए उपयोग करते हैं। इस तरह, विश्वासियों एवं अविश्वासियों दोनों के लिए मध्यवर्ती अवस्था है, और स्वर्ग अपने वर्तमान अवस्था में, नरक अपने वर्तमान अवस्था में — जिसे कभी-कभी "वर्तमान स्वर्ग" और "वर्तमान नरक" कहते हैं — अनंत और अंतिम नरक आग की झील होगी, अंतिम स्वर्ग नई पृथ्वी पर होगा। इसलिए, मध्यवर्ती अवस्था स्वर्ग और नरक के बीच का स्थान नहीं है; यह स्वर्ग या नरक उस रूप में हैं जैसे कि वे पुनरुत्थान से पहले अभी हैं। इस तरह, हर कोई मध्यवर्ती अवस्था में जाता है जब वे मरते हैं। मध्यवर्ती अवस्था सब के लिए, धर्मियों के पुनरुत्थान और दुष्टों के पुनरुत्थान के समय समाप्त होती है।

— डॉ. रैन्डी एल्कोर्न

मध्यवर्ती अवस्था की शुरूआत तब होती है जब हम मरते हैं और तब समाप्त होएगी जब मसीह वापस लौटता है। इसे "मध्यवर्ती" कहा जाता है क्योंकि यह वर्तमान पृथ्वी पर शारीरिक जीवन की हमारी वर्तमान अवस्था, और नए आकाश और नई पृथ्वी में शारीरिक जीवन की हमारी भविष्य वाली अवस्था के बीच में स्थित है। यह कुछ हद तक असामान्य अवस्था है क्योंकि, अन्य अवस्थाओं के विपरीत, मध्यवर्ती अवस्था में हमारी आत्माएँ हमारे शरीरों से अलग हो जाती है।

मध्यवर्ती अवस्था पर हमारी चर्चा तीन भागों में विभाजित होगी। सबसे पहले, हम शारीरिक मृत्यु को संबोधित करेंगे। दूसरा, हम पुनर्जीवित न हुए आत्माओं के भविष्य पर विचार करेंगे। और तीसरा हम पुनर्जीवित आत्माओं के भविष्य की जाँच करेंगे। आइए शारीरिक मृत्यु के मुद्दे के साथ शुरू करते हैं।

शारीरिक मृत्यु

शारीरिक मृत्यु एक सार्वभौमिक मानवीय अनुभव है, लेकिन यह बहुत ही अस्वाभाविक भी है। क्यों? क्योंकि हमारे शरीर मरने के लिए नहीं सृजे गए थे; वे हमेशा के लिए जीवित रहने हेतु डिजाइन किए गए थे। यह उन कारणों में से एक है कि मृत्यु इतनी दुःखद और इतनी दर्दनाक है। यह हमारे अस्तित्व को चकनाचूर कर देता है। यह हमें पृथ्वी से, जिसमें वास करने के लिए हमें रचा गया था बाहर उखाड़ फेंकता है। यह हमें हमारे परिवारों और प्रियजनों से अलग कर, हमारे संबंधों को तोड़ डालता है। और उनके लिए जो पीछे रह जाते हैं, यह बुरी तरह से दुःख क्कारण बनता है —यह कोई आश्चर्य नहीं है कि पवित्र शास्त्र शारीरिक मृत्यु को "शत्रु" कहता है।

कई वैज्ञानिक सिखाते हैं कि शारीरिक मृत्यु कोशिकीय गतिविधि की समाप्ति है। जब हमारे शरीर में कोशिकाएँ काम करना बंद कर देती हैं, तो हम मर जाते हैं। और यह दृष्टिकोण, जहाँ तक हो सके, सत्य है। लेकिन शारीरिक मृत्यु से जुड़े बाइबलीय धर्मविज्ञान के पहलू कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं आत्मिक मृत्यु के समान, शारीरिक मृत्यु भी उस अभिशाप का हिस्सा है जिसे परमेश्वर ने अदन की वाटिका में आदम के पाप के कारण मानवता पर डाला। आपको याद होगा कि उत्पत्ति 2:17 में, परमेश्वर ने आदम से कहा :

> पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना : क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा (उत्पत्ति 2:17)।

जब आदम ने निषिद्ध फल खाया, तो वह परमेश्वर के अभिशाप के तहत आ गया। परमेश्वर ने कृपालु हो कर आदम की शारीरिक मृत्यु में देरी की, ताकि आदम की मृत्यु तुरंत न हो। लेकिन उसने अभिशाप को पूरी तरह से नहीं हटाया, और आदम का शरीर अंततः मर जाता है। और जिस तरह आदम के पाप ने *आत्मिक* मृत्यु को पूरी मानव जाति में फैला दिया, उसी तरह इसने *शारीरिक* मृत्यु को भी हम पर फैला दिया। रोमियों 5 में पौलुस ने इस समस्या के बारे में विस्तार से बातचीत की। रोमियों 5:12-17 से इन उदाहरणों को सुनिए :

> इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, ... एक मनुष्य के अपराध से [बहुत] लोग मरे ...एक मनुष्य के अपराध के [कारण] मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया (रोमियों 5:12-17)।

जब हम मरते हैं, हमारी आत्माएँ हमारे शरीरों से अलग किए जाते हैं, और हमारे शरीरों को क्षय होने और मिट्टी में लौटने के लिए छोड़ दिया जाता है। जैसा कि हम उत्पत्ति 2:7 में पढ़ते हैं, परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा। और जब उत्पत्ति 3:19 में परमेश्वर ने आदम को अभिशाप दिया, तो उसने स्पष्टता से कहा कि आदम भूमि से रचा गया था और, इसलिए, भूमि में वापस लौट जाएगा। वह मिट्टी से बनाया गया था और फिर से मिट्टी बन जाएगा।

अब, मसीही लोग कभी-कभी ऐसा सोचने की गलती कर बैठते हैं कि चूंकि हमारे शरीर,जब हम मरते हैं तो हमारे साथ स्वर्ग नहीं जाते हैं, तो यह वास्तव में इतना महत्वपूर्ण नहीं हैं। लेकिन पवित्र शास्त्र दिखाता है कि हमारे शरीर अभी भी हमारा हिस्सा हैं, हमारे मरने के बाद भी। इसके सबसे स्पष्ट उदाहरण पुनरुत्थान हैं। उस विधवा के बेटे पर विचार कीजिए जिसे एल्लियाह ने 1 राजा 17:20-22 में मृतकों में से जीवित किया, या यीशु के दोस्त लाजर पर जिसे प्रभु ने यूहन्ना 11:43, 44 में मृतकों में से जीवित किया। इससे पहले कि वे जीवित हुए, उनके शरीरों को अभी भी उन लोगों के समान संदर्भित किया और सोचा गया जैसे कि वे जीवन में थे। ऐसा कोई सुझाव नहीं है कि उनके शरीर उनकी आत्माओं द्वारा छोड़े गए आवरण थे। और सभी ने उनके पुनरुत्थान को आशीष के रूप में देखा, क्योंकि इन लोगों के महत्वपूर्ण भाग — उनके शरीर — जीवन में लौट आए थे।

> तो, क्या होता है जब हम मरते हैं, ठीक है ना? यदि आप विश्वास करते हैं कि मध्यवर्ती अवस्था होती है कि जब हम मरते हैं तो हम अपने शरीरों से बाहर परमेश्वर के साथ मौजूद हैं, तो यह सोचना सहज हो सकता है कि हमारे शरीर अब हमारा हिस्सा नहीं हैं, क्योंकि क्या हम कहीं पर परमेश्वर के साथ नहीं हैं और फिर हमारा शरीर, जो अब हमारा हिस्सा नहीं है, वह कब्र में है? लेकिन वह कारण जिसके बारे में हम सोचने में गलत होंगे, एक, परमेश्वर ने हमें संपूर्ण व्यक्ति के रूप में बनाया। इसलिए, यह अलगाव वास्तव में एक दुःखद परिणाम है जो कि पाप में पतन के साथ होता है, जैसा कि जॉन कूपर इसे कहते हैं। और तथ्य यह है, कि हालांकि, यह है, कि अलगाव होता है ... जबकि अच्छी बात यह है कि मृत्यु के बाद भी लोग परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव कर रहे हैं, लेकिन, आप जानते हैं, हमें शरीर को धारण करने के लिए बनाया गया है, और क्योंकि हमें शरीर धारण करने के लिए बनाया गया है, और क्योंकि मसीह शरीर में जी उठा है, तो फिर यह जो हम से कहता है, वह है, ठीक है, भले ही यह दुःखद अलगाव है, यह कि हमारे शरीर अभी भी कब्र में है, जो अभी भी हमारा हिस्सा है, और अंतिम दिन में, मेरा मतलब है, यह शरीर जी उठाया जाएगा।
>
> — विन्सेंट बेकोट, **Ph.D.**

जब हमारे शरीर मरते हैं, तो हम आगे को संपूर्ण नहीं होते हैं। उनके लिए जो बचाए गए है, इसका अर्थ है कि हम उन कामों को नहीं कर सकते जिनको करने के लिए परमेश्वर ने हमें बनाया है, जैसे पृथ्वी को भरना और वश में करना। हाँ, स्वर्ग हमारी आत्माओं के लिए अद्‌भुत होगा। लेकिन शारीरिक मृत्यु फिर भी एक जबरदस्त नुकसान है, जिसको भविष्य में बहाल करने के लिए हमें आशा रखने हेतु प्रेरित करना चाहिए। और उन लोगो के लिए जो बचाए न गए हैं, यह एक निरंतर जारी रहने वाली तबाही है। यह उन्हें बुरी से बदतर स्थिति में ले जाती है, और उन्हें भविष्य में इससे भी बदतर पीड़ा का पूर्वाभास देती है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब जबकि हमने शारीरिक मृत्यु को मध्यवर्ती अवस्था की शुरूआत के रूप में वर्णित किया है, तो हम पुनर्जीवित न हुए आत्माओं के अनुभवों पर विचार करने के लिए तैयार हैं।

पुनर्जीवित न हुई आत्माएँ

जैसा कि हमने आत्मिक मृत्यु की हमारी चर्चा में देखा, कि जब हमारी आत्माएँ मरती हैं तो उनका अस्तित्व समाप्त नहीं होता है। वे सचेत होना भी समाप्त नहीं करते हैं। और यही बात तब भी सत्य है जब हमारी आत्माएँ शारीरिक मृत्यु के द्वारा हमारे शरीरों से अलग किए जाते हैं। हमारे शरीरों के मरने के बाद भी हमारी आत्माएँ अस्तित्व में होती हैं, सोचती हैं और महसूस करती हैं।

हम सभोपदेशक 12:7 में पढ़ते हैं :

> तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगी (सभोपदेशक 12:7)।

पुनर्जीवित न हुए लोगों को, इस तथ्य से बड़ा डर लगना चाहिए कि उनकी आत्माओं का अस्तित्व जारी है, क्योंकि जब उनकी आत्माएँ परमेश्वर के पास लौटती है जिसने इसे दिया, तो यह उसकी आशीषों का आनंद लेने के लिए नहीं है। यह नरक में उनकी न्यायोचित सजा भुगतने की शुरूआत करना है। जैसा कि यीशु ने लूका 12:4-5में सिखाया :

> जो शरीर को घात करते हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते है, उनसे मत डरो...घात करने के बाद जिसको नरक में डालने का अधिकार है, उसी से डरो (लूका 12:4-5)।

> मैं मानता हूँ कि लोगों को नरक पर दो कारणों से विश्वास करना चाहिए। पहला कारण यह है कि यीशु मसीह ने नरक के बारे में कई बार बात की थी। उदाहरण के लिए ... [उसने कहा] कि लोगों को उनसे नहीं डरना चाहिए जो शरीर को घात कर सकते हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते है। लेकिन हमें उससे डरना चाहिए जो शरीर को घात कर सकता है और आत्मा को नरक में भी फेंक सकता है। इसके अतिरिक्त, कलीसिया को इसमें विश्वास, व भरोसा करने की, और नरक के बारे में प्रचार करने की जरूरत है — दृढ़ता से बोलना है, लेकिन प्रेम के साथ — ताकि लोग परमेश्वर के समक्ष अपनी दशा को समझ सकें ताकि वे अनंतकाल के लिए दोषी न ठहराए जाएं।
>
> — रेव्ह. जोस एरिसटिडस, अनुवादित

पवित्र शास्त्र कई अलग-अलग शब्दों का उपयोग करता है जिन्हें धर्मविज्ञानी एवं अनुवादक सामान्य शब्द “नरक” में शामिल करते हैं। उदाहरण के लिए, इब्रानी शब्द *शीओल,* या हिन्दी में “शी-ओह्ल”, का उपयोग पूरे पुराना नियम में विभिन्न तरीकों से किया जाता है, जैसे भजन 9:17 में, पुनर्जीवित न हुई आत्माओं के घर का संदर्भ शामिल है। पुराना नियम *अबाडॉन,* या हिन्दी नें “अह-बॉडा-न” का भी उपयोग करता है, जिसका अर्थ अय्यूब 26:6 और नीतिवचन 15:11 जैसे स्थानों में “विनाश” है। और *बॉवर,* या हिन्दी में “गड्ढा”, यशायाह 14:15-19 में सजा के स्थान को संदर्भित करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

नए नियम में भी मध्यवर्ती अवस्था के दौरान आत्माओं को रखने वाले स्थान के लिए विभिन्न प्रकार के शब्द हैं। उदाहरण के लिए, यूनानी शब्द *हेडेस,* या हिन्दी में "हे-डीज़," का उपयोग कई तरीको से किया जाता है, जिसमें लूका 10:15 में सजा की जगह भी शामिल है। *अबूस्सोस* या अबिस, सामान्यतः दुष्ट आत्माओं के लिए एक जेलखाने को संदर्भित करता है, जैसे कि लूका 8:31 और प्रकाशितवाक्य 9:1-11 में। लेकिन रोमियों 10:7 में, पौलुस ने इसका उपयोग मनुष्यों की आत्माओं के स्थान का उल्लेख करने के लिए भी किया, जिसमें यीशु की धर्मी आत्मा शामिल है।

यह शब्द "गीन्ना" या गेहेना, हालांकि सार्वभौमिक रूप से उग्र दंड, पीड़ा और विनाश के स्थान की पहचान करता है। इसका उल्लेख कई अनुच्छेदों में किया गया है, जिसमें मत्ती 5:22, और मरकुस 9:43 शामिल हैं। गेहन्ना को अक्सर शारीरिक पीड़ा के रूप में वर्णित किया जाता है, जो कि इसे मध्यवर्ती अवस्था के साथ जोड़ने के बजाय, अंतिम अवस्था के साथ जोड़ता है। लेकिन याकूब 3:6 इंगित करता है कि गेहन्ना पहले ही से उपयोग में है, यह सुझाव देते हुए कि यह वह स्थान है जहाँ पुनर्जीवित न हुई आत्माएँ मध्यवर्ती अवस्था के दौरान जाती हैं।

सबसे स्पष्ट तस्वीर जो हमें मिलती है कि पुनर्जीवित न हुई आत्माएँ मध्यवर्ती अवस्था का अनुभव कैसे करती हैं वह लूका 16:19-31 से आती है। इस अनुच्छेद में, यीशु ने एक धनवान व्यक्ति का वर्णन किया जो मर गया और तुरंत हेडेस में तड़प उठा। लूका 16:23-25 को और हेडेस के इस विवरण को सुनिए।

> और अधोलोक में [धनवान मनुष्य] ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आँखें उठाई, और दूर से अब्राहम की गोद में लाजर को देखा। तब उसने पुकार कर कहा, "हे पिता, अब्राहम मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी उँगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।" परन्तु अब्राहम ने कहा, "हे पुत्र, स्मरण कर कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएँ ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएँ, परन्तु अब वह यहाँ शांति पा रहा है, और तू तड़प रहा है" (लूका 16:23-25)।

बाइबल यह स्पष्ट नहीं करती कि हेडेस के लिए यीशु का वृतांत ऐतिहासिक वृतांत है या एक दृष्टांत है। लेकिन मध्यवर्ती अवस्था की हमारी जाँच के लिए यह अंतर इतना ज्यादा प्रासंगिक नहीं है। आखिरकार यह वृतांत जिस चेतावनी को पेश करता है वह निरर्थक होगी, यदि वे पीड़ाएँ जिनका यह वर्णन करता है वास्तविक नहीं हैं।

> लोग प्रश्न पूछते हैं कि, उन लोगों का क्या होता है जो यीशु पर विश्वास नहीं करते जब वे मरते हैं। और उत्तर नए नियम में कई स्थानों में दिया गया है, लेकिन सबसे विस्तृत में से एक लूका 16 है, जहाँ यीशु ने एक दृष्टांत बताया, लेकिन यह ऐसा दृष्टांत है जो वास्तविक रूप से दिखाता है कि विश्वासियों एवं अविश्वासियों दोनों के लिए मृत्यु के बाद वाला जीवन कैसा है। अविश्वासी, जो कि एक धनवान व्यक्ति है, मरता है और पीड़ा में है। यह ठीक उसके मरने के एकदम बाद है। उसे पहले ही से दंडित किया जा रहा है क्योंकि उसने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया है और— निश्चित रूप से, मसीह से अलग — उसके पापों के लिए दाम नहीं चुकाया गया है। और इसलिए, उसे पीड़ा में होने के रूप में दिखाया गया है, लेकिन यह .. ऐसी अवस्था है जो अंतिम न्याय से पहले की है जब मसीह लौटता है।

— डॉ. वर्न एस. पोयथ्रेस

शारीरिक मृत्यु और पुनर्जीवित न हुई आत्माओं के संदर्भ में मध्यवर्ती अवस्था का पता लगाने के बाद, आइए अपने ध्यान को पुनर्जीवित आत्माओं की ओर मोड़ें।

पुनर्जीवित आत्माएँ

जाहिर है, पुनर्जीवित आत्माएँ वैसे ही अस्तित्व में रहती हैं जैसे कि पुनर्जीवित न हुई आत्माएँ रहती हैं। लेकिन उनके अनुभव बहुत अलग-अलग हैं। जबकि पुनर्जीवित न हुई आत्माएँ अपने अंतिम दंड के पूर्वाभास को भुगतती हैं, पुनर्जीवित हुई आत्माएँ अपने अंतिम आशीषों के पूर्वाभास का आनंद लेती हैं।

इस तथ्य के साथ शुरू करके के वे स्वर्ग में प्रभु की उपस्थिति में हैं, हम मध्यवर्ती अवस्था के दौरान पुनर्जीवित आत्माओं के सिर्फ तीन अनुभवों का उल्लेख करेंगे।

प्रभु की उपस्थिति

कई स्थानों पर, बाइबल के लेखकों एवं चरित्रों ने अपने विश्वास को व्यक्त किया कि जब पुनर्जीवित लोग मरते हैं, तो उनकी आत्माएं तुरंत स्वर्ग में परमेश्वर की उपस्थिति में ले जाई जाती है। उदाहरण के लिए, लूका 23:43 में, यीशु ने क्रूस पर पश्चातापी डाकू से कहा कि आज ही वे दोनों एक साथ स्वर्गलोक में होंगे। प्रकाशितवाक्य 6:9 परमेश्वर के स्वर्गीय निवास स्थान में वेदी के बहुत करीब शहीदों की आत्माओं के होने की बात करता है। और पौलुस ने शारीरिक मृत्यु को ऐसे समय के रूप में आशा से देखा जब उसकी आत्मा मसीह के साथ रहने के लिए चली जाएगी। 2 कुरिन्थियों 5:8 में पौलुस ने जो लिखा उसे सुनिए :

> हम...देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं (2 कुरिन्थियों 5:8)।

और फिलिप्पियो 1:23 में, उसने कहा :

> जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूँ, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है (फिलिप्पियो 1:23)

> मृत्यु के समय विश्वासियों के साथ क्या होता है? हाँ, यहाँ पर यीशु अपने मरने से पहली वाली रात में है ... वह चेलों के छोटे से समूह से घिरा हुआ है; वे शोकित हैं। ये उसके अंतिम कुछ वचन हैं, और वह उन्हें भविष्य के बारे में बताता है। जो पहली बात वह कहता है वह है ... तो, "मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने को जाता हूँ। और यदि मैं जा कर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।" इसलिए जब एक विश्वासी मरता है, यीशु कहता है, मैं उस विश्वासी के पास आऊँगा और कहूँगा, 'चलो, चलते हैं। यह जाने का समय है।' और मैं तुम्हें पिता के घर ले जाऊँगा" ... यह एक अद्भूत बात है। वह अनुरक्षक है। लेकिन वह सिर्फ अनुरक्षक ही नहीं है। वह गंतव्य भी है "मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जा रहा हूँ। और यदि मैं जा कर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।" तो वह

> वहाँ रहने के लिए ही मेरा अनुरक्षण नहीं करता है। वह गंतव्य भी है "लेकिन हम मार्ग कैसे जाने?" थोमा कहता है। वह कहता है, "मैं मार्ग हूँ। मैं सत्य हूँ। मैं ज्योति हूँ। तो वह अनुरक्षक है; वह गंतव्य है; वह मार्ग है। तो हमारे साथ क्या होता है जब हम मर जाते हैं? यीशु पर पूरा ध्यान लगाएँ। वह वहाँ तक आपका अनुरक्षण करेगा। वह वहाँ तक का मार्ग है। वह गंतव्य बनेगा। और बेशक, हमारे लिए मरने के द्वारा, वह एक जगह तैयार कर रहा है, । वही वह है जो क्रूस पर मरने के द्वारा हमें वहाँ पहुँचने में सक्षम बनाता है ताकि, वास्तव में, हमारे पाप के साथ निपटारा किया गया है, और हम क्रूस के माध्यम से स्वर्ग के लिए अपना मार्ग खोज सकें।
>
> — रेव्ह. रिको टाइस

जब पुनर्जीवित लोग मरते हैं, तो उनके शरीर कब्र में आराम करते हैं, परन्तु उनकी आत्मा तुरंत स्वर्ग में प्रभु की उपस्थिति में ले ली जाती हैं, जहाँ वे अंतिम पुनरुत्थान तक रहते हैं। हमें यहाँ स्पष्ट होना चाहिए कि "कब्र में" वाली मानक अभिव्यक्ति में वे सभी शामिल हैं जिनकी मृत्यु हो चुकी है, चाहे उनके शरीरों को भौतिक कब्रों में रखा गया था या नहीं।

साथ में, हमें यह उल्लेख करने के लिए रुकना चाहिए कि पूरे इतिहास में कुछ मसीहों ने "आत्मा की निद्रा" नामक दृष्टिकोण को सिखाया है। यह ऐसा विचार है कि जब हम मरते हैं तो परमेश्वर तुरंत हमारी आत्माओं को स्वर्ग *नहीं* ले जाता है। इसके विपरीत, हमारी आत्माएँ यीशु के लौटने तक हमारे शरीरों के साथ बेहोशी में रहती हैं। इस विचार के समर्थक दानिय्येल 12:2, और 1 कुरिन्थियों 15:51 जैसे पदों के लिए अपील करते हैं, जो मृतकों को ऐसे संदर्भित करते हैं जैसे कि वे सो रहे हैं।

लेकिन यह दृष्टिकोण पवित्र शास्त्र के साथ असंगत है। जैसा कि हमने देखा, यीशु, पौलुस, और अन्य लोग विश्वास करते थे कि वे अपनी मृत्यु के तुरंत बाद स्वर्ग में एक-दूसरे की उपस्थिति का आनंद उठाएंगे। और बाइबल सिखाती है कि शहीद पहले ही से वहाँ हैं और पूरी तरह सचेत हैं। साधारण शब्दों में कहें तो, जब बाइबल मृतकों के बारे में "सोते हुए" कहती है, तो यह व्यंजना के रूप में सबसे अच्छी तरह से समझा जाता है — मृत्यु के बारे में बात करने का एक सौम्य, रूपात्मक तरीका। यूहन्ना 11:11-14 में लाज़र की मृत्यु के बारे में यीशु ने स्वयं इस प्रकार बात की, जब उसने कहा कि लाज़र "सो गया था।" आधुनिक मसीही लोग इसी तरह की व्यंजना का उपयोग करते हैं जब हम कहते हैं कि मृत लोग "कूच कर गए," "चले गए," या "प्रभु के साथ रहने के लिए चले गए हैं।"

मध्यवर्ती अवस्था के दौरान पुनर्जीवित आत्माओं के पास एक दूसरा अनुभव है स्वर्ग में अन्य पुनर्जीवित आत्माओं के साथ संगति।

संगति

प्रकाशितवाक्य 6:9, 10 कहता है कि स्वर्ग में शहीद एक दूसरे को जानते हैं और एक दूसरे के साथ संगति करते हैं। और वे एक साथ एक आवाज में बोलते हैं जब वे अंतिम न्याय को जल्द करने के लिए परमेश्वर से अपील करते हैं।

और सुसमाचार में, जब पतरस, याकूब और यूहन्ना के सामने यीशु का रूपांतरण हुआ था, तो वह मूसा और एलिय्याह के साथ दिखाई दिया जो उसके साथ और एक दूसरे के साथ बाते करते थे। हम इसके बारे में मत्ती 17:3, मरकुस 9:4, और विशेषकर लूका 9:30, 31 में पढ़ते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब्राहम और धनवान मनुष्य वाले यीशु के वृतांत में, लाजर नाम के गरीब व्यक्ति की आत्मा को अब्राहम द्वारा सांत्वना दी जा रही है। इसके अलावा, लूका 16:26 में, अब्राहम कहता है कि एक भारी गड्ढा ठहराया गया है जो पुनर्जीवित आत्माओं को उन आत्माओं से अलग करता है जो पुनर्जीवित न हुई है। इससे पता चलता है कि अब्राहम और लाजर गड्ढे के अपनी ओर अकेले नहीं हैं, बल्ति अन्य सभी पुनर्जीवित आत्माओं की संगति में हैं।

और इब्रानियों 12:22, 23 "सिद्ध की गई धर्मी मनुष्यों की आत्माओं" की स्वर्गीय सभा के बारे में बोलता है। इब्रानियों 11:40 के संदर्भ में, इस सभा में प्रत्येक वह पुनर्जीवित व्यक्ति शामिल है जिसने शारीरिक मृत्यु का अनुभव किया है।

मध्यवर्ती अवस्था के दौरान पुनर्जीवित आत्माओं के जिस तीसरे अनुभव हम उल्लेख करेंगे वह है कि वे सिद्ध पवित्रता को पाते हैं।

सिद्ध पवित्रता

जब हम इस संदर्भ में मानवीय पवित्रता की बात करते हैं, तो हमारे ध्यान में नैतिक शुद्धता; और परमेश्वर की उपस्थिति में स्वीकार्यता दोनों है। जब हमारी आत्माएँ शारीरिक मृत्यु के द्वारा हमारे शरीरों से अलग हो जाती है, तो पाप हम पर अपनी पकड़ को खो देता है, और उस क्षण से हम उत्सुकता से सभी पापों से बचते हैं।

आपको अगस्टीन की शिक्षा याद होगी कि जब मानवता पाप में गिरी, तो हम *पोसे नॉन पिकारे* या पाप न करने योग्यता वाली अवस्था से *नॉन पोसे नॉन पिकारे,* या पाप न करने की अयोग्यता वाली अवस्था में चले गए। साथ में आपको याद होगा कि, अगस्तीन के अनुसार, जब पवित्र आत्मा हमारी आत्माओं को पुनर्जीवित करता है, तो वह हमें हमारी नैतिक योग्यता को बहाल करते हुए, *पोसे नॉन पिकारे* वाली अवस्था में वापस ले जाता है। अगस्तीन ने यह भी सिखाया कि अंतिम अवस्था में, हम *नॉन पोसे पिकारे* की दशा में पहुँचेंगे, जो कि पाप करने की अयोग्यता के लिए लातीनी भाषा है। लेकिन मध्यवर्ती अवस्था के बारे में क्या? पाप करने की योग्यता को हम कब खोते हैं? पवित्र शास्त्र सुझाव देता है कि हम पाप करने की योग्यता को वास्तव में तब खोते हैं जब हम मध्यवर्ती अवस्था में प्रवेश करते हैं। यही वह बात है जो इब्रानियों 12:23 के ध्यान में है जब वह इसे कहता है :

> सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं (इब्रानियों 12:23).

पुनर्जीवित आत्माएँ मध्यवर्ती अवस्था में सिद्ध बनते हैं क्योंकि वे अब पाप से भ्रष्ट नहीं हैं, और उन्हें परमेश्वर के निकटतम उपस्थिति में स्वीकार किया जाता है। जैसा कि वेस्टमिन्स्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म, प्रश्न 37 के लिए इसे कहता है :

> विश्वासियों की आत्माओं को उनकी मृत्यु के समय पवित्रता में सिद्ध बनाया जाता है
> और वे तुरंत महिमा में चले जाते हैं।

इस विचार का समर्थन करने के लिए, कैटेकिज़्म 2 कुरिन्थियों 5:1, 6 और 8; फिलिप्पियों 1:23; और लूका 23:43 की ओर इशारा करता है। इनमें से प्रत्येक पद इंगित करते हैं कि जैसे ही पुनर्जीवित लोग मरते हैं, वे तुरंत स्वर्गलोक में लिए जाते हैं।

लेकिन शारीरिक मृत्यु ऐसी घटना क्यों है जो हमें पाप की भ्रष्टता और प्रभाव से मुक्त करती है? अंग्रेज धर्मविज्ञानी जॉन ओवन ने, जो कि 1616 से 1683 तक रहे थे, इस प्रश्न पर अंतर्दृष्टि प्रदान की। उन्होंने तर्क

दिया कि जब पाप हमारे ह्दयों में वास करता है, तो वह हमारे शरीर का इस्तेमाल हमारी आत्माओं के खिलाफ लड़ने के लिए करता है। जैसा कि ओवन ने *द नेचर, पावर, डिसीट, एंड प्रिवलेंसी ऑफ इनड्वैलिंग सिन इन बिलीवर्स* के अध्याय 6 में लिखा :

> पतरस दिखाता है कि [पापमय अभिलाषा] किसका विरोध करते हैं और किसके खिलाफ लड़ते हैं — अर्थात "आत्मा" और उसमें वास करने वाली अनुग्रह की व्यवस्था से; याकूब वे किसके साथ लड़ते या किस के द्वारा — अर्थात, उन "सदस्यों से" या उस भ्रष्टता से जो हमारे मरणहार शरीरों में वास करता है।

यहाँ ओवन ने 1 पतरस 2:11 और याकूब 4:1 का उल्लेख किया, और निष्कर्ष निकाला कि हमारे भौतिक शरीर वह हथियार हैं जिनका उपयोग पाप हमें पाप की ओर धकेलने के लिए करता है।

प्रेरित पौलुस ने रोमियों 6:12 में इसी तरह का तर्क दिया, जहाँ उसने लिखा :

> इसलिए पाप तुम्हारे नश्वर शरीर में राज्य न करे, कि तुम उसकी लालसाओं के अधीन रहो (रोमियों 6:12)।

और रोमियों 7:22-23 में उसने जोड़ा :

> क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूँ; परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है (रोमियों 7:22-23)।

जब पुनर्जीवित लोग मरते हैं, तो हमारे अंदर वास करने वाला पाप हमारे शरीरों का उपयोग हमें पाप की ओर धकेलने के लिए अब नहीं कर सकता। जैसा कि ओवन ने *ऑफ द मॉर्टिफिकेशन ऑफ सिन इन बिलीवर्स,* अध्याय 2 में लिखा :

> अंदर वास करने वाला पाप तब तक रहता है जब तक हम इस संसार में हैं ... हमारे पास "मृत्यु का शरीर" है ... जिससे हम अपने शरीरों की मृत्यु के द्वारा छुड़ाए जाते हैं और किसी से नहीं।

परमेश्वर ने हमें हमेशा के लिए पृथ्वी पर रहने के लिए रचा है। और इसका अर्थ है कि मसीह पर भरोसा रखने वालों के लिए मृत्यु सिर्फ एक अस्थाई निराशा है। हाँ, यह दर्दनाक है, और यह बहुत ज्यादा दुःख पैदा करता है। लेकिन हम उन लोगों के समान शोक नहीं करते, जिनके पास कोई उम्मीद नहीं है। थोड़े समय बाद, हमारी आशा है कि मध्यवर्ती अवस्था हमें दुःख और पाप से मुक्त करेगा, और हमें पुनरुत्थान तक स्वर्ग में मसीह के साथ रहने की अनुमति देगा। इसलिए, हम बिना डर के मृत्यु का सामना कर सकते हैं, यह विश्वास करते हुए कि परमेश्वर हमारे दुःख का अंत करेगा और स्वर्ग में हम पर वर्णन से बाहर, आशीषों को बरसाएगा।

"जीवितों और मृतकों" पर हमारे अध्याय ने अभी तक मानव जीवन की वर्तमान अवस्था, और मध्यवर्ती अवस्था को संबोधित किया है जो तब शुरू होती है जब हम मरते हैं। इसलिए, अब हम अपने तीसरे प्रमुख विषय की ओर जाने के लिए तैयार हैं : मानवता की अंतिम अवस्था जब अंतिम दिन पूर्ण हो जाती है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अंतिम अवस्था

एक पूर्व अध्याय में, हमने एस्केटॉन, या अंतिम दिनों, को तीन चरणों में विभाजित किया है : उद्घाटन, यीशु के जीवन और पृथ्वी वाली सेवा तक फैला है, जिसमें पहली शताब्दी के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं द्वारा किए गए आधारभूत कार्य शामिल हैं। उद्घाटन के दौरान, आने वाला युग, जो उसके विश्वासयोग्य लोगों के लिए परमेश्वर की आशीषों द्वारा चिह्नित है, वह वर्तमान युग के साथ अधिव्यापन करने लगा, जो कि पाप, दुःख और मृत्यु के द्वारा चिह्नित है।

दूसरा चरण निरंतरता का है, जो उद्घाटन के तुरंत बाद शुरू हुआ। यह वह समय है जिसमें हम अभी रहते हैं, इसलिए यह ऐसा समय भी है जो वर्तमान अवस्था और व्यक्तिगत युगांत की मध्यवर्ती अवस्था से छादित है। इस चरण के दौरान, हम इस वर्तमान युग और आने वाले युग में सह-अस्तित्व के तनाव को महसूस करते हैं।

और तीसरा चरण परिपूर्णता है, जो इस वर्तमान युग को पूरी तरह से समाप्त कर देगा, और स्थायी रूप से इसे आने वाले युग के साथ बदल देगा। व्यक्तिगत युगांत-विद्या के संबंध में, परिपूर्णता वह चरण है जब सभी मनुष्य एक साथ अपने अंतिम अवस्था में पहुँच जाते हैं।

अंतिम अवस्था की अपनी चर्चा को हम तीन भागों में विभाजित करेंगे। सबसे पहले हम मृतकों के शारीरिक पुनरुत्थान को संबोधित करेंगे। दूसरा, हम पुनर्जीवित नहीं हुए लोगों के भविष्य का वर्णन करेंगे। और तीसरा, हम पुनर्जीवित लोगों के भविष्य का पता लगाएंगे। आइए सबसे पहले हम मृतकों के शारीरिक पुनरुत्थान को देखें।

शारीरिक पुनरुत्थान

जब परमेश्वर ने मानवता की सृष्टि की, तो उसने हमें शरीर और आत्माएँ दीं। मध्यवर्ती अवस्था के दौरान, हमारे शरीर हमारी आत्माओं से अस्थायी रूप से अलग किए जाते हैं। लेकिन जब अंतिम अवस्था शुरू होती है, तो सभी के शरीरों को जो कभी भी मरे हों, उन्हें फिर से जीवित किया जाएगा, ताकि हम सब संपूर्ण मनुष्य के समान परमेश्वर के अंतिम न्याय का सामना कर सकें। इस घटना को अक्सर "सार्वजनिक पुनरुत्थान" कहा जाता है क्योंकि इसमें वे सब शामिल हैं जो कभी भी मरे हों, चाहे वे पुनर्जीवित हों या पुनर्जीवित न हुए लोग हों।

पुराने एवं नए दोनों नियमों में सार्वजनिक पुनरुत्थान को स्पष्टता से सिखाया गया है। और इब्रानियों 6:1, 2 इस बात पर जोर देता है कि यह सबसे बुनियादी सिद्धांतों में एक है जिसकी पुष्टि प्रत्येक मसीही को करनी चाहिए।

> मृतकों का सार्वजनिक पुनरुत्थान महत्वपूर्ण है क्योंकि, जैसा कि पौलुस, प्रेरितों के काम 17 में कहता है, परमेश्वर ने एक दिन ठहराया है जिस में वह जगत का न्याय करेगा, और मसीह को मरे हुओं में से जिलाकर, हमें इसका प्रमाण दिया है। यह न्याय संपूर्ण मनुष्य का है, और सार्वजनिक पुनरुत्थान इस तथ्य की पुष्टि करने के बारे में है कि हम संपूर्ण मनुष्य हैं, और हम परमेश्वर के सामने संपूर्ण मनुष्य के रूप में खड़े होंगे। और यह क्या करता है कि न सिर्फ इस तथ्य की पुष्टि करता है कि हमारा न्याय शरीरों में होने जा रहा है जिसमें हम जीवित रहे, पाप किया, विश्वास किया, लेकिन यह भी कि हम संपूर्ण मनुष्य के रूप में अनंत काल व्यतीत करने जा रहे हैं। यह न सिर्फ उस

> दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है जिसमें हम युगांत-विद्या को देखते हैं, बल्कि यह उस दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है जिस तरह से हम एक दूसरे को और प्रत्येक मनुष्य की अंतर्निहित गरिमा और मूल्य को देखते हैं, क्योंकि हम परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं।
>
> — डॉ. वोडी बॉशम, जूनियर

पुराने नियम में, भविष्यद्वक्ताओं ने सिखाया कि सांसारिक शरीर जो एक बार मर चुके हैं और मिट्टी में मिल गए हैं वे फिर से मिट्टी में से जी उठेंगे। और वे ईश्वरीय न्याय का सामना करने के लिए जी उठेंगे। दानिय्येल 12:2 कहता है :

> जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिए, और कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिए (दानिय्येल 12:2)।

और यशायाह 26:19-21 भविष्यवाणी करता है :

> तेरे मरे हुए लोग जीवित होंगे; मुर्दे उठ खड़े होंगे। हे मिट्टी में बसनेवालों, जागकर जयजयकार करो ... [पृथ्वी] मुर्दों को लौटा देगी ... देखो, यहोवा पृथ्वी के निवासियों को अधर्म का दण्ड देने के लिए अपने स्थान से चला आता है (यशायाह 26:19-21)।

भजन 49:7-15, भजन 73:24-28, और अय्युब 19:25-27 जैसे पुराने नियम के पद भी न्याय के लिए पुनरुत्थान का संकेत देते हैं।

नए नियम में, यीशु ने कई बार सार्वजनिक पुनरुत्थान की पुष्टि की। उदाहरण के लिए, मत्ती 22:31, 32 और लूका 20:35-38 में, उसने यह कहते हुए कि परमेश्वर मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर है, परमेश्वर को "अब्राहम का ... इसहाक का और ... याकूब का परमेश्वर कहा। और यूहन्ना 5:28-29 में यीशु ने जो कहा उसे सुनिए :

> वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं वे [मनुष्य के पुत्र का] शब्द सुनकर निकल आएँगे — जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे (यूहन्ना 5:28-29)।

पुराने नियम के समान, यीशु ने कहा कि सभी मृतक सार्वजनिक पुनरुत्थान के समय परमेश्वर के न्याय का सामना करने के लिए जी उठेंगे। और नए नियम के अन्य विश्वनीय पात्रों ने भी यही बात मानी, जिसमें यूहन्ना 11:24 में मार्था, और प्रेरितों के काम 4:2 में प्रेरित शामिल हैं। प्रेरित पौलुस ने प्रेरितों के काम 17:32, 23:6, और 24:21 में, सार्वजनिक पुनरुत्थान के लिए तर्क दिया, साथ में स्वयं अपनी पत्री 1 कुरिन्थियों 15:12-42 में भी।

नया नियम सिखाता है कि सार्वजनिक पुनरुत्थान, परमेश्वर के न्याय सिंहासन के आगे होगा, या कम से कम यही ऐसा स्थान है जहाँ पूरी मानवता को जी उठाने के बाद लाया जाएगा। प्रकाशितवाक्य 20:11-13 में प्रेरित यूहन्ना के दर्शन को सुनिए :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> फिर मैं ने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको, जो उस पर बैठा हुआ है, देखा ... समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उसमे थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उनमें थे दे दिया, और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया (प्रकाशितवाक्य 20:11-13)।

सार्वजनिक पुनरुत्थान के जिस आखिरी विवरण का हमें उल्लेख करना चाहिए वह है, उन लोगों का क्या होगा जो न्याय के दिन के आने पर भी जीवित हैं। उन लोगों के समान जिन्हें जिलाया गया है, जो अभी भी जिंदा हैं, उनका भी न्याय किया जाएगा। पहला कुरिन्थियों 15:51, 52 पुनर्जीवित लोगों के लिए विशिष्ट संदर्भ के साथ इस तथ्य का उल्लेख करता है। लेकिन यह हर जगह सभी लोगों के लिए समान रूप से लागू होता है। जैसे कि पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 5:9-10 में लिखा :

> इस कारण हमारे मन की उमंग यह है कि चाहे साथ रहें चाहे अलग रहें, पर हम [प्रभु को] भाते रहें। क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए (2 कुरिन्थियों 5:9-10)।

परिपूर्णता के समय, मृतक जी उठेंगे, और परमेश्वर के न्याय के सिंहासन के आगे उन लोगों में शामिल होंगे जो जीवित रहे हैं। और वह हमारे कार्यों के अनुसार हम सब का न्याय करेगा। जो उसके प्रति विश्वासघाती रहे हैं वे अपने पापों के लिए दोषी ठहराए जाएंगे और अनंत सजा को पाएंगे। लेकिन जो विश्वासयोग्य रहे हैं — जो पवित्र आत्मा के द्वारा पुनर्जीवित किए गए हैंं और मसीह मसीह में धर्मी ठहराए गए हैं — अनंत पुरुस्कार को पायेंगे।

अब जबकि हमने देख लिया है कि अंतिम अवस्था की शुरूआत मृतकों के शारीरिक पुनरुत्थान के साथ होती है, आइए पुनर्जीवित न हुए लोगों के भविष्य को संबोधित करें।

पुनर्जीवित न हुए लोग

जैसा कि हमने देखा, आदम के पाप के कारण, पाप में गिरे सभी मनुष्य सजा के पात्र हैं। लेकिन इसके अलावा, हम स्वयं अपने पापों के लिए भी दोषी हैं। परिणामस्वरूप, परमेश्वर हम सभी को दोषी ठहराने में न्यायसंगत होगा। परन्तु उसकी महान दया के कारण, वह कुछ को बचा लेता है। दुःख की बात है, लेकिन न्यायसंगत है, जो बचाए नहीं गए हैं वे अपने पापों के लिए उचित दंड भुगतते हैं। जैसा कि यीशु ने स्वयं मत्ती 16:27 में कहा :

> मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा (मत्ती 16:27)।

जिस शब्द का अनुवाद यहाँ पर "प्रतिफल देगा" किया गया है वह यूनानी शब्द, "*अपोडिडोमी*" (ἀποδίδωμι) से आया है। कुछ अनुवाद इस शब्द का अनुवाद "पुरस्कार" करते हैं। लेकिन यीशु स्पष्ट था कि यहाँ "पुरस्कार" दंड और आशीष दोनों को संदर्भित करता है "[हर एक] को उसके कामों के अनुसार।" यही विचार पूरे पवित्र शास्त्र में स्पष्ट है जिसमें मरकुस 9:43-47, यूहन्ना 5:29, 2 कुरिन्थियों 5:10, और 2 पतरस 2:4-9 शामिल है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इससे पहले, हमने कई अलग-अलग शब्दों का उल्लेख किया था जिनका उपयोग पवित्र शास्त्र नरक के लिए करता है। नरक के लिए नए नियम का विवरण आम तौर पर दो श्रेणियों में से एक में आता है, या तो यह नरक को अंधकार के स्थान के रूप में संदर्भित करता है, या आग के स्थान के रूप में।

इसके अंधकार के संबंध में, पवित्र शास्त्र नरक को "*टो स्कोटॉस टो एकोटेरॉन*" कहता है, जिसका अर्थ है "बाहरी अंधकार" या सरल शब्दों में "अंधकार।" हम इसे मत्ती 8:12, 22:13 और 25:30 जैसे स्थानों में देखते हैं। इसे यहूदा 13 पद में "*हॉ ज़ोफॉस टू स्कोटूस*" भी कहा जाता है, जिसका अर्थ "सबसे काला अंधकार" है।

यह अंधकार महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका अर्थ है कि परमेश्वर अपने महिमामय अनुग्रहकारी उपस्थिति को नरक में प्रकट नहीं करता है। प्रकाशितवाक्य 21:23, 24 सिखाता है कि नए यरूशलेम में, परमेश्वर की महिमा का प्रकाश पूरे नगर को भर देगा। लेकिन नरक में दुष्ट लोगों को इस प्रकाश से दूर बंद कर दिया जाएगा। उन्हें परमेश्वर की कृपा, अनुग्रह, और दया की महिमा से सदा के लिए अलग कर दिया जाएगा। जैसा कि पौलुस ने 2 थिस्सलुनीकियों 1:9 में लिखा :

> वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनंत विनाश का दण्ड पाएँगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)।

इसका यह कहने का अर्थ नहीं है कि नरक में परमेश्वर मौजूद नहीं है। आखिरकार, वह सर्वव्यापी है, जिसका अर्थ है कि वह हर समय हर जगह मौजूद है। लेकिन नरक में, वह एक जेलर और सजा देने वाले के समान मौजूद है, न कि अनुग्रहकारी, महिमामय उद्धारकर्ता के रूप में।

> आपने बहुत से लोगों को यह कहते हुए सुना है कि परमेश्वर नरक में मौजूद नहीं है क्योंकि 2 थिस्सलुनीकियों 1 में पौलुस बताता है कि प्रभु की मौजूदगी से दूर रहना कैसा होता है। और फिर भी, निश्चित रूप से परमेश्वर नरक में मौजूद है क्योंकि परमेश्वर सभी स्थानों में मौजूद है। वह अपने क्रोध में वहाँ मौजूद है। लोगों की यह सोच है कि यदि वे नरक जाते हैं, तो वाह, कितना अच्छा समय उनके पास होने जा रहा है, और यह पड़ोस में शराब के एक होटल के समान होगा, और वे जो चाहेंगे वही सब कुछ करेंगे। वास्तव में, यह परमेश्वर का सक्रिय क्रोध होगा। वह अपने अनुग्रह, अपनी कृपा में अनुपस्थित रहेगा। आप हारून वाले महान आशीर्वाद के बारे सोचते हैं : "यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे, यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए।" नरक में इन में से कोई भी नहीं होगा। यह परमेश्वर का मूंह मोड़ना होगा; परमेश्वर से जो अलगाव उनका है, परमेश्वर के प्रकोप से, और परमेश्वर के अभिशाप के प्रति वे सचेत रहेंगे। क्रूस पर हमारे प्रभु यीशु के बारे में सोचिए। इसे देखने के लिए जाने हेतु हमारे पास एक अच्छा स्थान है। "तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?" क्रूस पर परमेश्वर ने अपना प्रकोप अपने पुत्र पर डाला था। और इसलिए, जब लोग कहते हैं कि परमेश्वर नरक में मौजूद नहीं है, तो इनमें से कुछ धारणाएँ आवश्यक हैं। परमेश्वर का अनुग्रह, परमेश्वर की भलाई, परमेश्वर का प्रेम, ये सभी बातें पूरी तरह से नदारद हैं। यही वह बात है जिसके बारे में पौलुस बात कर है ... परन्तु परमेश्वर का प्रकोप, परमेश्वर का आतंक, परमेश्वर की सुंदरता और पवित्रता का बोध जिसको उन्होंने ठुकरा दिया, परन्तु जिस तक उनके पास पहुँच अनंत काल तक नहीं है, ये बातें नरक में मौजूद रहेंगी। यह हमेशा हमेशा के लिए परमेश्वर का अभिशाप और प्रकोप होगा।

— डॉ. रिचर्ड फिलिप्स

नरक को अंधकार का स्थान बताने के अलावा, पवित्र शास्त्र कहता है कि नरक आग का स्थान है। यह : यहूदा 7 में "अनंत आग"; प्रकाशितवाक्य 20:14, 15 में "आग की झील"; और मत्ती 13:50 में "आग का कुण्ड" कहलाता है। और जैसा कि हमने पहले देखा था, इसे गीन्ना या गेहेन्ना के रूप में भी जाना जाता है — बहुत उग्र सजा, पीड़ा और विनाश का स्थान। गेहेन्ना नाम हिन्नोम की घाटी को चिह्नित करता है, जहाँ परमेश्वर को त्यागने वाले इस्राएलियों ने अपने बच्चों को झूठे देवताओं के लिए बलिदान में जला दिया था। दूसरा इतिहास 28:3 हमें बताता है कि अहाज़ राजा ने वहाँ अपने बच्चों का बलिदान चढ़ाया। और 2 इतिहास 33:6 रिपोर्ट देता है कि मनशशे राजा ने भी ऐसा ही किया। स्पष्ट है कि यह पृथ्वी वाली घाटी असली नरक के लिए सिर्फ एक रूपक है। फिर भी, यह उस तरह की पीड़ा की ओर संकेत करता है जिसे दुष्ट वहाँ भोगते हैं।

लेकिन शायद नरक के बारे में सबसे भयावह बात जो हम कह सकते हैं वह है कि यह कभी खत्म नहीं होगा। जैसा कि पौलुस ने 2 थिस्सलुनीकियों 1:9 में लिखा, दुष्ट "अनंत विनाश का दण्ड पाएँगे।" मत्ती 25:41 में यीशु ने यही बात कही, जहाँ उसने नरक को "अनंत आग" के रूप में संदर्भित किया, और मत्ती 25:46 में, जहाँ उसने "अनंत दण्ड" के बारे में बात की। इसी रीति से, इब्रानियों 6:2 नरक को "अनंत न्याय" कहता है।

आग की झील में अनंत पीड़ा के विचार से हर किसी को भयभीत होना चाहिए। यह हमें प्रेरित करना चाहिए कि हम मसीह में दया के लिए भीख माँगने हेतु परमेश्वर के पास दौड़ें। और जब हम न बचाए गए अपने परिवार और दोस्तों के इस तरह की पीड़ा में अनंत काल बिताने की बात सोचते हैं, तो यह हमें आश्चर्यचकित कर सकता है कि प्रेम करने वाला परमेश्वर लोगों पर इतनी कठोर सजा कैसे दे सकता है जिन्हें उसने बनाया। क्या उनका पाप वास्तव में इस तरह के भयानक भविष्य का अनुमोदन करता है?

> एक पादरी के रूप में, सबसे कठिन प्रश्नों में से एक जिसका उत्तर हमें देना है वह है, कैसे एक प्रेम करने वाला परमेश्वर किसी को भी, चाहे उसका शत्रु ही क्यों न हो, उसे अनंत दंढ या नरक में भेज सकता है? और मैं सोचता हूँ कि उत्तर परमेश्वर की पवित्रता की समझ के अंतर्गत है। मुझे नहीं लगता कि अधिकांश लोग समझते हैं कि परमेश्वर कितना पवित्र है, और बदले में हम कितने पापी हैं। हमारे पास परमेश्वर की पवित्रता का बहुत ही सीमित दृष्टिकोण है, और इसलिए हम यह नहीं समझते हैं कि जब हमने एक असीम पवित्र परमेश्वर के खिलाफ अपराध किया या पाप किया है, तो हम अनंत दंड के लायक हैं। जब आप वास्तव में इसे समझते हैं कि यह वास्तव में बहुत मायने रखता है, लेकिन मुझे लगता है कि यह तथ्य कि परमेश्वर इतना ज्यादा पवित्र है और बदले में, हम इतने ज्यादा पापी है कि उसका प्रकोप न्यायसंगत रूप से मानव जाति पर डाला जा सकता था ... यदि उसकी पवित्रता और हमारी पापमयता के बीच अंतर इतना बड़ा नही होता, यदि वह गड्डा इतना चौड़ा न होता, तो परमेश्वर सिर्फ कह सकता था, "सुनों, मैं तुम्हें तुम्हारे पापों के लिए क्षमा करता हूँ। तुम जो चाहते हो करो," और कोई भी नरक में नहीं जाएगा। परन्तु वहाँ यीशु का क्रूस है। उसने क्रूस पर यीशु के ऊपर अपना क्रोध उँडेला था। यदि कोई नरक न होता और यदि परमेश्वर की पवित्रता और हमारी अधार्मिकता के बीच कोई अंतर नहीं होता, तो यह बहुत गंभीर लगता है। और इसलिए, शुभ समाचार यह है, कि क्रूस पर यीशु के बलिदान के कारण कोई भी परमेश्वर के क्रोध से बच सकता है। और इसलिए, मैं सोचता हूँ कि प्रश्न यह नहीं है, कि क्यों एक प्रेमी परमेश्वर लोगों को नरक में भेजेगा, बल्कि यह, कि संसार में कैसे

> संभव है कि एक प्रेमी परमेश्वर हम में से किसी को भी स्वर्ग जाने की अनुमति देगा? और उसने यह यीशु के द्वारा किया। और वह एकमात्र तरीका जिससे हम कभी भी इसकी तह तक पहुँच पाते हैं वह है, जब हम समझ जाते हैं कि वह कितना पवित्र है और हम कितने पापी हैं।
>
> — डॉ. मैट कार्टर

यह सुनने में चाहे कितना भी कठोर लग सकता है, दुष्ट नरक में अपनी सजा के लायक हैं। और यद्यपि हम उनकी पीड़ा के लिए रो सकते हैं क्योंकि हम उन्हें प्यार करते हैं, हम इसे कभी भी अन्यायपूर्ण या अयोग्य नहीं मान सकते हैं।

पुनर्जीवित न हुए लोगों के शारीरिक पुनरुत्थान और दंड के संबंध में अंतिम अवस्था को देख लेने के बाद, आइए पुनर्जीवित लोगों की अंतिम आशीषों पर ध्यान करें।

पुनर्जीवित लोग

पुनर्जीवित लोगों के लिए, अंतिम अवस्था अद्‌भुत होगी। मृत्यु हम पर पकड़ नहीं बना पाएगी। मृतकों में से हमारे शरीरों को जी उठाने के बाद, प्रभु अपना अंतिम निर्णायक न्याय को सुनाएगा। और हमारे लिए, ये न्याय केवल आशीषों को लेकर आएगा। मसीह में, हम सिद्ध हैं। और परमेश्वर का न्याय इसको प्रतिबिंबित करेगा। हमें ठीक से नहीं पता है कि यह किस के समान होगा। लेकिन पवित्र शास्त्र जो विवरण हमें देता है, वह हमें आश्वस्त करने के लिए पर्याप्त हैं कि हमारी अंतिम अवस्था हमारे सबसे बड़े सपनों से भी बढ़कर होगी।

इस तथ्य के साथ शुरू करके कि हमारे पास सिद्ध शरीर होगा, हम अंतिम अवस्था के उन तीन पहलूओं पर विचार करेंगे जिनका आनंद पुनर्जीवित लोग लेंगे।

सिद्ध शरीर

हमने पहले ही देख लिया है कि अंतिम न्याय के लिए हमारे शरीरों को पुनः जीवित किया जाएगा। लेकिन यह समझने के लिए उत्साहजनक है कि हमारे शरीर तब क्या होंगे। मध्यवर्ती अवस्था में, हमारी पुनर्जीवित आत्माएँ पवित्रता में सिद्ध किए जाते हैं, लेकिन हमारे शरीर कब्र में क्षय हो जाते हैं। तो, इस मायने में, मध्यवर्ती अवस्था के दौरान हमारा उद्धार पूरा नहीं होता है। लेकिन यह अंतिम अवस्था में पूरा होता है क्योंकि, जैसा कि पौलुस ने रोमियों 8:23 में कहा, कि वह समय है जब हमारे शरीरों को छुटकारा दिया जाता है। हमारी आत्माओं को वर्तमान अवस्था में पुनर्जीवित किया जाता है और मध्यवर्ती अवस्था में वे भ्रष्टता से मुक्त हो जाएंगे। लेकिन हमारे शरीरों को उनके नवीनीकरण और सिद्धता हेतु अंतिम अवस्था के लिए अंतिम अवस्था की प्रतीक्षा करनी होगी। धर्मविज्ञानी अक्सर इसे हमें "महिमा दिए जाने" के रूप में संदर्भित करते हैं, क्योंकि हम अंततः परमेश्वर की महिमा को उस रीति से प्रतिबिंबित करने में सक्षम होंगे जिस तरह से उसने शुरूआत में अभिप्राय रखा था।

लेकिन वास्तव में हमारे महिमामय शरीर कैसे होंगे? 1 कुरिन्थियों 15:52-54 में, पौलुस ने उन्हें "अविनाशी" और "अमर" के रूप में वर्णित किया, अर्थात हम फिर कभी बीमार, या कमजोर, या मरेंगे नहीं। और फिलिप्पियों 3:21 में पौलुस ने जो लिखा उसे सुनिए :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> [यीशु मसीह] हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा (फिलिप्पियों 3:21)।

जैसा कि यह अविश्वसनीय लग सकता है, नया नियम बताता है कि यीशु का पुनरुत्थान हुआ शरीर, शारीरिक एवं मौलिक था। उदाहरण के लिए, लूका 24:30-43 में वह भोजन करने में सक्षम था। और थोमा यीशु की पसली को छू सका, जहाँ वह छेदा गया था, जैसा कि हम यूहन्ना 20:27 में देखते हैं।

लेकिन यीशु का पुनरुत्थान हुआ शरीर, उसके उस शरीर से अलग था जो मर गया था। लूका 24:36 में वह अचानक से अपने प्रेरितों को प्रकट होने, और लूका 24:31 में वह उनकी उपस्थिति से अचानक गायब होने में सक्षम था। इसी तरह, यूहन्ना 20:19, 26 में प्रवेश किए बिना वह कमरों में दिखाई दिया। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:42-44 में इन विरोधाभाषों को संबोधित किया, जहाँ उसने इस विवरण को लिखा :

> शरीर नाशवान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है; वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है, और सामर्थ्य के साथ जी उठता है; स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है (1 कुरिन्थियों 15:42-44)।

पौलुस ने उन शरीरों की तुलना जिन्हें हम दफनाते हैं ऐसे बीजों से की जो बढ़कर पौधे बनते हैं। और उसका कहना था, कि हमारे प्राकृतिक शरीर और हमारे आत्मिक शरीर के बीच निरंतरता है — पहला, दूसरे में बदल जाता है। लेकिन आत्मिक शरीर ने प्राकृतिक शरीर की भ्रष्टता को खो दिया है, और अनंत जीवन के लिए महिमामय नए गुणों को प्राप्त किया है।

> मैं हमारे पुनरुत्थान और महिमाम शरीरों की प्रकृति के बारे में एक महत्वपूर्ण गलतफहमी को दूर करना चाहूँगा। यह 1 कुरिन्थियों 15 की एक भ्रामक व्याख्या पर आधारित है। मैं कई विश्वासियों से मिला हूँ जो "आत्मिक शरीर" वाले पौलुस के वाक्यांश को पढ़ते हैं और मान लेते हैं कि पुनरुत्थान वाला शरीर बिना माँस-हड्डी का होगा, यानी कि यह अभौतिक होगा। और वास्तव में यह वह बात नहीं है जो पौलुस सिखा रहा है। नए नियम की यूनानी भाषा में "आत्मिक" के लिए दो अलग-अलग शब्द हैं एक जिसका अर्थ है "से बना" या आत्मा "से रचा जाना", और दूसरा जिसका अर्थ है आत्मा के लिए "अनुकूलित" होना। और यह बाद वाला शब्द है जिसका उपयोग पौलुस यहाँ करता है। वह यह नहीं कह रहा है कि हमारे पुनरुत्थान, महिमामय शरीर आत्मा *से बने* होंगे, लेकिन यह कि वे पूरी तरह से आत्मा के अनुकूल हो जाएंगे। इससे उसका क्या अर्थ है? हाँ, अभी हमारे भौतिक शरीर पाप में पतन के परिणाम और भ्रष्टता को भुगतते हैं, और यद्यपि हमें आत्मिक रूप से नवीनीकृत किया गया है, इस शरीर में अभी भी पापी अभिलाषाएँ हैं। यह उन सुखों का पीछा करना चाहता है जो निषिद्ध हैं, और इसी तरह से। और जब तक हम इस शरीर में हैं, हम माँस और आत्मा के बीच उस लड़ाई को भुगतते हैं जिसका वर्णन पौलुस अक्सर करता है ... लेकिन पुनरुत्थान और महिमा में, जो शरीर हम प्राप्त करते हैं वे पूर्ण रूप से आत्मा के नियंत्रण के अनुकूल होंगे। हमारी भ्रष्टता के सभी निशानों को शारीरिक शरीर में से मिटा दिया जाएगा ताकि यह लड़ाई जो हम लगातार लड़ रहे हैं वह पूरी तरह से अब समाप्त हो जाए। मैं उस दिन के लिए तरसता हूँ।

— डॉ. चार्ल्स एल. कुआर्ल्स

पुनर्जीवित लोगों की अंतिम अवस्था का दूसरा पहलू जिसका उल्लेख हम करेंगे वह है, कि हम नए आकाश और नई पृथ्वी में रहेंगे।

नया आकाश और नई पृथ्वी

हम में से कई लोग यह जानकर संतुष्ट रहते हैं कि जब हम मरेंगे तो हमारी आत्माएँ स्वर्ग जाएँगी। लेकिन जैसा कि हमने देखा, यह केवल हमारी मध्यवर्ती अवस्था है। हम स्वर्ग में सिर्फ आंशिक आशीषों को प्राप्त करते हैं, क्योंकि हमारे शरीर कब्र में रहते हैं। जब हम शारीरिक रीति से नए आकाश और नई पृथ्वी में रहते हैं तो हम अपने सभी और पूर्ण आशीषों को प्राप्त करेंगे। जब से आदम और हव्वा ने वर्तमान सृष्टि को दूषित किया है, यह हमेशा से परमेश्वर के लोगों की उम्मीद रही है।

उत्पत्ति 3:17-19 में, आदम के पाप के कारण परमेश्वर ने पृथ्वी को शापित किया। लेकिन उसी अध्याय के 15वे पद में, परमेश्वर ने संकेत दिया कि जब उद्धारकर्ता आता है, तो वह अभिशाप के प्रभावों को उलट देगा। यशायाह नबी ने इस आशा को यशायाह 65:17 और 66:22 स्पष्ट किया, जब उसने परमेश्वर के पृथ्वी वाले राज्य की परिपूर्णता को "नए आकाश और नई पृथ्वी" के रूप में संदर्भित किया। 2 पतरस 3:13 में प्रेरित पतरस ने इस आशा की पुष्टि की। और प्रेरित यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दर्ज अपने भविष्यसूचक दर्शन में इसके आने को पहले ही से देखा। प्रकाशितवाक्य 21:1 में, यूहन्ना ने सूचना दी :

> फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी (प्रकाशितवाक्य 21:1)।

नए आकाश और नई पृथ्वी के बारे में यूहन्ना का विवरण 22:5 तक जारी रहता है।

नए आकाश और नई पृथ्वी में, पृथ्वी पर परमेश्वर के अभिशाप को पूरी तरह से मिटा दिया जाएगा। भूमि अब हमें परेशान नहीं करेगी, और हम आसानी के साथ परमेश्वर के सिद्ध किए हुए राज्य का आनंद लेंगे और उसका पालन-पोषण करेंगे। और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर हमारे साथ दृश्यमान रीति से उपस्थित रहेगा। प्रकाशितवाक्य 21:22, 23 सिखाता है कि उसकी महिमा नए यरूशलेम को प्रकाश देगी। और प्रकाशितवाक्य 21:3–22:4 हमें यह सुनिश्चित करता है कि परमेश्वर स्वयं उस पवित्र नगर में अपने सिंहासन से राज्य करेगा।

तीसरा विवरण जिसका उल्लेख हम अंतिम अवस्था में अपने पुनर्जीवित जीवनों के बारे में करेंगे वह है कि हम अनंत पुरस्कारों को प्राप्त करेंगे।

पुरस्कार

पुनर्जीवित लोगों को, जो मसीह ने उनकी ओर से किया उसके लिए, उनकी वफादारी के लिए, और परमेश्वर की आज्ञाकारिता में जो भले काम उन्होंने किए हैं उनके लिए पुरस्कृत किया जाएगा। उदाहरण के लिए 2 तीमुथियुस 4:8 में, पौलुस ने "धार्मिकता के मुकुट" का उल्लेख किया। और 1 पतरस 5:4 में, पतरस में "महिमा के मुकुट" की बात की। 2 तीमुथियुस 2:12 में, पौलुस ने यह भी कहा कि हम मसीह के साथ राज्य करेंगे। इब्रानियों 4:1-11 कहता है कि हम परमेश्वर के अंतिम "सब्त विश्राम" में प्रवेश करेंगे। और मत्ती 6:20, मरकुस 10:21, और लूका 12:33 सहित कई स्थानों में, यीशु ने स्वर्ग में अपने धन को इकट्ठा करने की बात कही।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ईमानदारी से कहें तो हम यह नहीं जानते हैं कि ये पुरस्कार और खजाने क्या होंगे। लेकिन हम अपने प्रेमी परमेश्वर के अनुग्रहकारी स्वभाव को जानते हैं, और हम भरोसा कर सकते हैं कि उसने हमारे लिए जो भी योजना बनाई है वह उसमें हमारे महान आनंद को सदा पाने हेतु हमारा मार्गदर्शन करेगी।

उपसंहार

इस अध्याय में, हमने व्यक्तिगत युगांतविद्या में "जीवितों और मृतकों" के विभिन्न अवस्थाओं का पता लगाया। हमने पुनर्जीवित न हुए और पुनर्जीवित हुए लोगों की वर्तमान अवस्था पर विचार किया है। हमने शारीरिक मृत्यु की सार्वभौमिकता, और पुनर्जीवित न हुए एवं पुनर्जीवित हुए लोगों के उसके बाद वाले अनुभवों के संबंध में मध्यवर्ती अवस्था का वर्णन किया है। और शारीरिक पुनरुत्थान के साथ शुरू करते हुए, और पुनर्जीवित न हुए एवं पुनर्जीवित हुए लोगों के अंतिम भविष्य के साथ जारी रखते हुए हमने मानवता की अंतिम अवस्था को देखा है।

व्यक्तिगत युगांतविद्या का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह याद दिलाता है कि इस पाप में पतित संसार में हमारे जीवनों के अनंत परिणाम हैं। हम में से जिन लोगों ने उद्धार प्राप्त किया है, उनके लिए हमें मध्यवर्ती अवस्था में माप से बढ़कर आशीषित होने की, और अंतिम अवस्था में उससे भी बढ़कर आशीषित होने की गारंटी दी गई है। लेकिन जो लोग मसीह का तिरस्कार करते हैं उनके पास आने वाले संसार में कोई आशा नहीं है। अपने भले भविष्य के ऊपर बड़ी चाह से देखने के बजाय, इन तथ्यों से हमें सुसमाचार प्रचार करने के लिए प्रेरित होना चाहिए, ताकि नए आकाश और नई पृथ्वी में जितने ज्यादा से ज्यादा लोग संभव हो सकें हमारे अनंत आनंद और संगति को साझा कर पाएं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।